हिन्दी पाक्षिक

सेमन्या कण्वघाटी

RNI No.: UTTHIN/2013/54659

वर्ष-12 अंक-05 हरिद्वार, बुधवार, 15 जनवरी, 2025 मूल्य-दो रूपया मात्र पृष्ठ-8

सीएम धामी ने किया अंतरराष्ट्रीय प्रवासी उत्तरखंडी सम्मेलन का शुभारंभ

देहरादून । मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने देहरादून में अंतरराष्ट्रीय प्रवासी उत्तराखंडी सम्मेलन का शुभारंभ किया। विभिन्न देशों में निवासरत उत्तराखंडियों के इस समागम में अपनी मूल जड़ों, विरासत और मातृभूमि के प्रति अटूट प्रेम और उत्साह की झलक दिखी।

मुख्यमंत्री ने उत्तराखंड के प्रवासियों को संबोधित करते हुए कहा कि तेजी से विकसित हो रहे उत्तराखंड में निवेश की व्यापक संभावना है। साहसिक पर्यटन, पावर जेनरेशन, एरोमेटिक, विनिर्माण, कृषि, उद्यान, हर्बल, आयुष एंड वैलनेस इत्यादि में निवेश की आभार संभावनाएं हैं। कहा कि हमने राज्य को निवेश डेस्टिनेशन के रूप में स्थापित करने के लिए नीतिगत और ढांचागत दोनों स्तर पर बड़े सुधार किए हैं। काम शुरू करने में आसानी हो इसके लिए नियमावली में उसी अनुरूप सुधार किए हैं। अपराधमुक्त और भयमुक्त समाज के लिए अनेक सख्त वैधानिक प्रावधान

किए हैं।

सड़क, रेल, हवाई अड्डा, रोपवे, संचार नेटवर्क का बेहतर इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार किया है, जिससे राज्य एक सुरक्षित, सुगम और आकर्षक निवेश स्थल के रूप में भी तेजी से उभर रहा है। नीति आयोग और अन्य राष्ट्रीय- अंतरराष्ट्रीय रेटिंग संस्थाओं की रैंकिंग भी इसी और इशारा करती है। मुख्यमंत्री ने आह्वान किया कि उत्तराखंड की पलायन जैसी विकट समस्या के समाधान के लिए अपनी मातृभूमि के किसी गांव - कस्बे को गोद लेते हुए उसको विकसित और संरक्षित करने का प्रण लें। उन्होंने कहा कि राज्य को आपकी योग्यता, अनुभव और तकनीकी ज्ञान की बहुत आवश्यकता है और राज्य की अपेक्षाओं और आकांक्षाओं को साकार करने में यह महत्वपूर्ण भी है। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह सम्मेलन सांस्कृतिक और सामाजिक जुड़ाव का एक विशिष्ट महोत्सव भी है। हमारे प्रवासी उत्तराखंडी अपनी ईमानदारी, मेहनत और समर्पण के लिए देश-विदेश में सम्मान की दृष्टि से देखे जाते हैं। कहा कि जिस तरह से देश-विदेश में भारत का नाम आप लोग रोशन कर रहे हैं इसी तरह से अपनी मातृभूमि उत्तराखंड का नाम भी रोशन करें। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमने प्रवासियों से बेहतर समन्वय और सहयोग प्रदान करने के लिए प्रवासी प्रकोष्ठ का भी गठन किया है। हम शीघ्र वेंचर फंड का भी प्रावधान करेंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्ष 2025 उत्तराखंड के इतिहास में एक मील का पत्थर साबित होने जा रहा है। इस वर्ष राज्य अपना रजतोत्सव मना रहा है। आगामी 28 जनवरी से राज्य राष्ट्रीय खेलों की मेजबानी के लिए तैयार है। इसी माह सम्मान नागरिक संहिता कानून लागू करने जा रहे हैं। हाल ही में हमने शीतकालीन पर्यटन की शुरुआत भी की है। जो राज्य की आर्थिक के लिए गेमचेंजर साबित होगा। उत्तराखंड के प्रवासियों ने अपने अनुभव साझा करते हुए बताया कि किस तरह से उन्होंने भी बचपन में यहां की पगडंडिया नापी है। तब के और आज के उत्तराखंड में बहुत बड़ा परिवर्तन आया है। तब हमने रोजगार की तलाश में विदेश का रुख किया था। कहा कि आज बदलते उत्तराखंड में युवाओं को काम करने के लिए बहुत संभावनाएं है। क्योंकि आज उत्तराखंड ने बहुत से क्षेत्रों में विकास के बड़े मानक तय किए हैं। प्रवासी उत्तराखंडी गिरीश पंत, अनीता शर्मा, देव रतूड़ी, विनोद जेठुडी, ए. के. काला और शैलेश उप्रेती ने अंतर्राष्ट्रीय प्रवासी उत्तराखंडी सम्मेलन की पहल के लिए मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी और उत्तराखंड सरकार की सराहना करते हुए कहा कि इससे उन्हें अपनी जड़ों से जुड़ने और अपनी माटी के लिए कुछ करने का अवसर मिला है। हम सभी अपने अनुभव, तकनीक और ज्ञान से राज्य सरकार के साथ मिलकर पलायन की इस समस्या का बेहतर समाधान कर सकते हैं। कहा कि हम सभी प्रवासियों को राज्य के दुरस्त क्षेत्र का कोई- ना - कोई गांव जरूर गोद लेना चाहिए। अपना गांव तो गोद ले ही सकते हैं। गांव गोद नहीं ले सकते तो कम - से - कम किसी बच्चे को ही गोद लें। बहुत से प्रवासियों ने अपनी मातृभाषा में संबोधन किया जिससे मातृभूमि के प्रति उनका गहरा नाता दिखा। मुख्यमंत्री ने उत्तराखंड के विकास में अपना योगदान देने वाले तथा राज्य के गांव को गोद लेने वाले उत्तराखंड के प्रवासियों गिरीश पंत, अनीता शर्मा, देव रतूड़ी, विनोद जेठुडी, ए. के. काला और शैलेश उप्रेती को सम्मानित भी किया।

हरिद्वार के विकास और व्यवस्था के लिए भाजपा ज़रूरी : त्रिवेंद्र रावत

हरिद्वार । हरिद्वार नगर निगम चुनाव में भारतीय जनता पार्टी की चुनाव संचालन समिति की बैठक में बोलते हुए हरिद्वार सांसद त्रिवेंद्र सिंह रावत ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी ने उत्तराखंड राज्य का गठन किया और हरिद्वार को उसका एक अभिन्न हिस्सा बनाया। तब से लेकर आज तक भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व में उसका एक-एक कार्यकर्ता हरिद्वार के विकास और सुशासन के लिए कार्यरत है। पिछले नगर निगम चुनाव में कांग्रेस के मेयर प्रत्याशी के जितने से जो चूक हुई है उसका खामियाजा हरिद्वार की जनता अब तक भुगत रही है।

आज सफाई स्वच्छता से लेकर नगर निगम क्षेत्र में आने वाली हर एक व्यवस्था ध्वस्त हो चुकी है। उन्होंने हर एक कार्यकर्ता का आह्वान किया कि हरिद्वार की बेहतरी के लिए भारतीय जनता पार्टी के प्रत्येक प्रत्याशी को जिताने के लिए आगे आने वाले सात दिनों में पूरे मनोयोग से परिश्रम करें। इस अवसर पर बोलते हुए हरिद्वार विधायक मदन कौशिक ने कहा कि कांग्रेस पार्टी के पास चुनाव में जाने के लिए आज कोई मुद्दा बचा नहीं है इसीलिए कांग्रेस भ्रामक प्रचार जनता में कर रही है। उन्होंने बताया कहा कि प्रत्येक कार्यकर्ता को कांग्रेस के इस भ्रामक प्रचारों का मुंह तोड़ जवाब देना चाहिए। निगम प्रत्याशी किरण जैसल और उनके पति सुभाष चंद्र का नगर निगम में पुराना अनुभव है जिसका लाभ उन्हें जनता के आशीर्वाद के रूप में लगातार मिल रहा है और भाजपा एक बड़े अंतर से चुनाव को जीतने जा रही है। रानीपुर विधायक आदेश चौहान ने कहा कि एक वो समय भी था कि जब हरिद्वार स्थानीय निकायों में भारतीय जनता पार्टी एक या दो सीट ही जीत पाती थी परंतु आज कार्यकर्ताओं एवं किए गए विकास कार्यों के बल पर भारतीय जनता पार्टी नगर निगम में 50 से अधिक सीट जीतने जा रही है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि मेयर सीट पर भी ऐतिहासिक जीत भारतीय जनता पार्टी को मिलेगी। हरिद्वार भाजपा के जिला अध्यक्ष संदीप गोयल ने कहा कि आज हरिद्वार में राजनीतिक रूप से भारतीय जनता पार्टी के अलावा कोई और दल दिखाई ही नहीं पड़ रहा है। कहीं कोई चुनावी लड़ाई है ही नहीं। कांग्रेस गर्त में डूब चुकी है। भारतीय जनता पार्टी नगर निगम चुनाव हरिद्वार में भारी मतों और ऐतिहासिक जीत के साथ उभर कर के सामने आएगी। इस अवसर पर बोलते हुए पूर्व मेयर मनोज गर्ग ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी का प्रत्येक कार्यकर्ता स्वयं को किरण जैसल और अपने वार्ड का प्रत्याशी समझ कर ही प्रचार में जुटे क्योंकि यह जीत एक-एक कार्यकर्ता और हरिद्वार के एक-एक नागरिक की जीत होगी। हरिद्वार नगर पालिका के पूर्व अध्यक्ष राजकुमार अरोड़ा ने कहा कि चुनाव में जाने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार है कि वह पार्टी का टिकट मांगे किंतु जब पार्टी का टिकट निश्चित हो जाए उसके बाद सभी को अपने मतभेद भुलाकर एकजुट होकर के पार्टी की जीत के लिए कार्य करना चाहिए। पूर्व अध्यक्ष कमल जौरा ने अपनी शुभकामनाएं प्रत्याशी किरण जैसल और सभी साठ वार्डों के वार्ड प्रत्याशियों को दीं। कार्यक्रम का संचालन करते हुए विमल कुमार ने भारतीय जनता पार्टी के सभी दिवंगत और पुराने कार्यकर्ताओं को याद किया और कहा कि भारतीय जनता पार्टी कार्यकर्ता आधारित अनुशासित पार्टी है इसलिए प्रत्येक कार्यकर्ता पूरे मनोयोग से चुनाव में जुट जाएं और जो चूक हमसे 5 वर्ष पूर्व हुई थी उसका प्रायश्चित मेयर पद पर किरण जैसल को और सभी वार्डों में अपने-अपने प्रत्याशियों को भारी मतों जीताकर करें।

हरिद्वार में बारिश ने बढ़ाई ठिठुरन, ठंड से कांपे लोग

हरिद्वार । धर्मनगरी में शनिवार रात को शुरू हुई बारिश रविवार सुबह तक जारी रही। इस कारण सुबह के समय लोगों को बड़ी परेशानी उठानी पड़ी। साथ ही दिन में भी कई दफा रुक-रुक कर बारिश होने से लोगों ठिठुरन का सामना करना पड़ा। शाम को शीत लहर चलने और कोहरा छाने के बाद धर्मनगरी में ठंड और बढ़ गई। हरिद्वार में रविवार को 6 एमएम बारिश रिकॉर्ड हुई। रविवार को पूरा दिन आसमान में बादल छाए रहे। साथ ही सुबह के समय बारिश होती रही। इस दौरान कामगार बारिश में भीगते हुए अपने कार्यस्थल तक पहुंचे। बाजार भी बारिश रुकने के बाद खुलने शुरू हुए। सुबह करीब 10 बजे बारिश रुकने के बाद लोगों को थोड़ी राहत मिली। लेकिन एक घंटे बाद दोबारा बारिश शुरू हो गई। जिसके बाद दिनभर रुक-रुक कर बारिश होती रही। बारिश और बादलों के कारण दिन में धूप नहीं निकली। वीकेंड पर बाजारों में ग्राहकों की बड़ी भीड़ रहती है, लेकिन बारिश की वजह से बड़ी कम संख्या में ग्राहक रविवार को वीकेंड पर बाजारों में खरीदारी करने पहुंचे। दिन में भी बारिश में लोग भीगते हुए सड़कों पर आवाजाही करने को मजबूर रहे। बाजारों में ग्राहकों की कमी के चलते शाम को दुकानदारों ने अपनी दुकानें जल्दी बंद कर दी। वहीं एक दफा फिर शाम को कोहरा छाने और शीत लहर चलने के बाद धर्मनगरी में ठंड बढ़ गई। शाम के समय लोग कई स्थानों पर आग जला कर हाथ तपते नजर आए। रात को भी ठंड का एहसास बढ़ा रहा।

सम्पादकीय

आरक्षण की मृगतृष्णा!

अटलजी की सरकार में योजना आयोग में रहे एक बड़े दलित नेता प्रो.सूरजभान ने कहा था- हर परिवार को न्यूनतम पाँच एकड़ जमीन दे देजिए और अपना ये आरक्षण अपने पास रखिये ये कामकाजी कर्मठ लोग अपनी हैसियत खुद बना लेंगे। स्वतंत्रता के बाद भारतमाता की पुनर्प्राणप्रतिष्ठा का सपना पाले गांधी जी इहलोक से प्रस्थान कर गए। अन्ना जैसे सभी समाजसेवी कहते हैं कि आज गांव संकट में हैं, इस देश को बचाना है तो गांवों को बचाना होगा। मोहन भागवत जी भारतमाता ग्राम्यवासिनी के वैभव की बात करते हैं और गाँवों को बचाने के लिए व्यापक पैमाने पर अभियान की जरूरत पर जोर देते हैं। गांधी ग्राम स्वराज के पैरोकार थे। उन्हें इसकी पूरी आशंका थी कि आजादी के बाद नई अर्थव्यवस्था का प्रहार गांवों में होगा, और हुआ भी। यूरोपीय दर्शन से प्रभावित पं.जवाहरलाल नेहरू ने शहरों को विकास का मानक बना दिया। श्रम आधारित कुटीर उद्योगों की जगह भारी मशीनों का बोलबाला शुरू हुआ। गांव की मिश्रित अर्थव्यवस्था भंग होती गयी। परिणाम यह हुआ कि 90 के ग्लोबलाइजेशन के बाद, टाटा, बाटा सभी गाँव पहुंच गए। गांव के परंपरागत कौशल को संगठित व बड़ी कंपनियों ने हजम करना शुरू कर दिया। सबसे पहले इसी वर्ग से काम छिना जो गांव की अपनी स्वतंत्र अर्थव्यवस्था के कारक थे। मध्यप्रदेश के रीवा जिले के जिस बड़ीहर्दी नामक गाँव का मैं निवासी हूँ उसका इतिहास पाँच सौ वर्ष से ज्यादा पुराना है। जो गाँव दो सौ वर्ष भी पुराने होंगे वहां के उम्रदराज लोगों ने आहिस्ता-आहिस्ता ढहती अर्थव्यवस्था को अपनी नजरों से देखा होगा। हमारे गाँव में प्रायः हर वृत्ति के पारंगत लोग थे। लुहार, बढ़ई, सोनार, ठठेर, ताम्रकार, रंगरेज, कोरी, धोबी, रंगरेज, नाई लखेरा, पटवा, मनिहार, बेहना,भड़भूजा बाँस का काम करने वाले बँसोर,चमड़े का जूता बनाने वाले चर्मकार, कुम्हार, बनिया, किसान। सभी एक दूसरे पर निर्भर या यों कहें परस्पर पूरक। सन् सत्तर के दशक तक मेरी जानकारी में रुपये का विनिमय महज 10 प्रतिशत था। सभी काम सहकार और वस्तु विनिमय के आधार पर चलते थे। बड़ी कंपनियों के उत्पादों ने गाँव में सेध लगानी शुरू कर दी। सब एक-एक कर बेकार होते गए। आज मेरे गाँव से लगभग समूचा कामकाजी वर्ग पलायन कर गया। लुहारी टाटा ने छीन ली और बाटा चर्मकार होकर पहुंच गए। सोनारों के धंधे में भी ब्रांडेड कंपनियाँ आ गई। एक बार टीवी डिबेट में मेरे एक साथी ने आपत्ति उठाई कि आप उनके उत्थान के पक्षधर नहीं हैं क्या? मैंने जवाब दिया हूँ.. कैसा उत्थान चपरासी की नौकरी पाना उत्थान है क्या.? जिनके पास सदियों से पीढ़ी दर पीढ़ी पारंपरिक कौशल है उसे आधुनिकता के साथ जोड़ा जाना चाहिए। यदि उन्हें ही कौशल संपन्न बनाया जाता तो आज गाँवों में टाटा-बाटा, तनिष्क नहीं घुसते। सबसे बड़ा खेल राजनीति का रहा। उन्होंने जातियों को वोट बैंक में बदल दिया और आरक्षण की मृगतृष्णा दिखा कर समूचे कामकाजी समाज को नौकरी की लाइन में खड़ा कर दिया। जबकि वास्तविकता यह है कि देश की सत्ता का संचालन करने भगवान् स्वयं आ जाएं तो वे सबको नौकरी नहीं दे सकते। एक सुनियोजित साजिश के तहत परंपरागत कौशल छीन कर उद्योगपतियों के हवाले कर दिया गया। गांधी ने जो ग्रामोद्योग वाली स्वाबलंबी व्यवस्था सोची थी उसका सत्यानाश हो गया। हर छोटे-बड़े काम उद्योगपतियों के हवाले कर दिए गए। उद्योग जातीय बंधन नहीं मानता इसलिए पंडित बिंदेशरी पाठक आज देश के सबसे बड़े स्वीपर हैं और पंडित विश्वनाथ दुबे (जबलपुर) व देशपांडे जी(पुणे) ने देश के सबसे बड़े मुरगीपालक। आरक्षण से ज्यादा जरूरी था इस वर्ग का आर्थिक सशक्तिकरण। यदि दलित जातियों के पास धन आ जाता तो सामाजिक गैरबराबरी अपने आप मिट जाती। अटलजी की सरकार में योजना आयोग में रहे एक बड़े दलित नेता प्रो.सूरजभान ने कहा था- हर परिवार को न्यूनतम पाँच एकड़ जमीन दे देजिए और अपना ये आरक्षण अपने पास रखिये ये कामकाजी कर्मठ लोग अपनी हैसियत खुद बना लेंगे। सत्तानशीनों से पूछिये क्या हुआ सीलिंग एक्ट का? यह तो सांविधानिक व्यवस्था थी कि एक परिवार के पास निर्धारित रकबा से ज्यादा भूमि न हो। अतिशेष जमीन भूमिहीनों में बाँट दी जाए। छः दशक काँग्रेस का शासन रहा क्या हुआ उस संविधानिक व्यवस्था का। भाजपा सरकार क्यों नहीं सोचती कि अतिशेष भूमि बाँटी जाए। चौधरी चरण सिंह उत्तरप्रदेश में आज भी चकबंदी के फैसले और उसपर कड़ाई से अमल के लिए जाने जाते हैं। सत्ता में नए जमाने के जमीदार काबिज हैं। जो नहीं थे वे कुर्सी पाते ही बन गए। आज गांवों के सामने नया संकट है। पहला तो यह कि सत्तर प्रतिशत लैंडहोल्डिंग दस प्रतिशत लोगों के पास है। ये दस फीसद लोगों की दोहरी नागरिकता है। हैं किसान पर रहते शहर में हैं। बड़े नगरों की पचास किमी की परिधि में अब ज्यादातर शहरी साहब ही किसान हैं। जमीनों का मालिकाना हक इन्हीं के पास है। ये बड़े अफसर हैं या व्यवसायी। इनका गाँवों की उन्नति से कोई लेना देना नहीं। निवेश और औद्योगिकीकरण के नाम पर जोत की जमीनें जा रही हैं। नेशनल हाइवेज का विस्तार में भी जोत की जमीन का बड़ा हिस्सा जा रहा है। गांव के जो मध्यमवर्गीय किसान हैं उन्हें डराया जा रहा है कि खेती जोखिम का धंधा है। शहरी कारोबारी ठेके की खेती करने गाँव घुस रहे हैं। हताश किसान एक मुश्त रकम पाकर खेती छोड़ रहा है। सरकारें किसानों की सुविधाओं की बातें तो कर रही हैं लेकिन उनका भरोसा नहीं जीत पा रहीं। यह कथित किसान आंदोलन भी कुछ इसी तरह के भ्रम का परिणाम है। कहीं पढ़ा था कि ब्राजील में ऐसा ही हुआ। गांवों में सिर्फ बीस प्रतिशत लोग रह गए। वे पलायन कर शहरों के स्लम में बस गए। खेती शहरी कारोबारियों के कब्जे में आ गई। अपना देश जब आजाद हुआ था तब 85 फीसद लोग गावों में रहते थे। अब यह आँकड़ा 65 फीसदी तक पहुंच गया। इस दरम्यान शहरों की संख्या तीन गुना बढ़ गई, नब्बे हजार गाँव खत्म हो गए।

युवाओं के आध्यात्मिक शक्ति पुंज थे स्वामी विवेकानंद !

डॉ श्रीगोपाल नारसन

युवाओं के सबसे बड़े प्रेरक और स्वयं भी युवा संत रहे स्वामी विवेकानंद संसार की एक ऐसी दिव्य आत्मा मानव रूप में हुई है जिन्होंने बहुत कम आयु में जीवन के कई जन्मों का पुरुषार्थ कर युवाओं के सामने एक सार्थक उदाहरण प्रस्तुत किया था।स्वामी विवेकानंद न सिर्फ एक संत थे बल्कि एक सोच थे,एक राष्ट्रवादी विचारधारा थे, एक नवक्रांति है,एक नवनिर्माण की मशाल थे तो अपनी वाकपटुता व बौद्धिक कौशल से दुनिया का दिल जीतने वाले एक महान कर्मयोगी भी।उन्हें नैतिक मूल्यों के विकास एवं युवा चेतना के जागरण हेतु प्रतिबद्ध माना गया तो मानवीय मूल्यों के पुनरुत्थान के सजग प्रहरी, अध्यात्म दर्शन और संस्कृति को जीवंतता देने वाली संजीवनी बूटी के रूप में एक महारथी भी।वे वेदान्त के विख्यात और प्रभावशाली आध्यात्मिक गुरु के रूप में प्रतिष्ठित हुए। स्वामी विवेकानन्द को युवाओं के आदर्श के रूप में देखा जाता हैं। उनकी सोच रही कि युवको को शारीरिक प्रगति से ज्यादा आंतरिक प्रगति की आवश्यकता है। उन्होंने युवकों को प्रेरणा देते हुए कहा था कि पहले हर अच्छी बात का मजाक बनता है, फिर उसका विरोध होता है और अंत में उसे स्वीकार कर लिया जाता है। वे युवकों में जोश भरते हुए कहा करते थे कि,% उठो मेरे शेरों ! इस भ्रम को मिटा दो कि तुम निर्बल हो। जो तुम सोचते हो वह हो जाओगे।% ऐसी ही कुछ प्रेरणाएं हैं जो आज भी युवकों को आन्दोलित करती हैं, पथ दिखाती हैं और जीने का दर्शन प्रदत्त करती हैं।

स्वामी रामकृष्ण परमहंस के परम् शिष्य स्वामी विवेकानंद एक ऐसे संत हुए जिनका रोम-रोम राष्ट्रभक्ति से ओत-प्रोत था। राष्ट्र के दीन-हीनजनों की सेवा को ही वे ईश्वर की सच्ची पूजा मानते थे।

इस युवा संन्यासी ने निजी मुक्ति को जीवन का लक्ष्य नहीं बनाया था, बल्कि करोड़ों देशवासियों के उत्थान को ही अपना जीवन-लक्ष्य बनाया। उनके सदवचन, किसी की भी जिंदगी परिवर्तित कर सकते है।उनके शब्दों में, ब्रह्मांड की सारी शक्तियां पहले से हमारी हैं। वो हमी हैं, जो अपनी आंखों पर हाथ रख लेते हैं और फिर रोते हैं कि कितना अंधकार है। जिस तरह से विभिन्न स्रोतों से उत्पन्न धाराएं अपना जल समुद्र में मिला देती हैं, उसी प्रकार मनुष्य द्वारा चुना हर मार्ग चाहे वह अच्छा हो या बुरा, भगवान तक जाता है।

किसी की निंदा न करें। यदि आप मदद के लिए हाथ बढ़ा सकते हैं, तो जरूर बढ़ाएं। यदि नहीं बढ़ा सकते हैं, तो अपने हाथ जोड़िए, अपने भाइयों को आशीर्वाद दीजिए और उन्हें उनके मार्ग पर जाने दीजिए।आत्मा के लिए कुछ असंभव है। ऐसा सोचना सबसे बड़ा विधर्म है। अगर कोई पाप है, तो वो यही है; ये कहना कि %तुम निर्बल हो या अन्य निर्बल हैं। अगर धन दूसरों की भलाई करने में मदद करे, तो इसका कुछ मूल्य है अन्यथा ये सिर्फ बुराई का एक ढेर है और इससे जितना जल्दी छुटकारा मिल जाए, उतना बेहतर है।जिस समय जिस काम के लिए प्रतिज्ञा करो, ठीक उसी समय पर उसे करना ही चाहिए, नहीं तो लोगों का विश्वास उठ जाता है।उस व्यक्ति ने अमरत्व प्राप्त कर लिया है, जो किसी सांसारिक वस्तु से व्याकुल नहीं होता। हम वह हैं, जो हमें हमारी सोच ने बनाया है इसलिए इस बात का ध्यान रखिए कि आप क्या सोचते हैं। शब्द गौण हैं, विचार रहते हैं, वे दूर तक यात्रा करते हैं।जब तक आप खुद पर विश्वास नहीं करते, तब तक आप भगवान पर विश्वास नहीं कर सकते। सत्य को हजार तरीकों से बताया जा सकता है, फिर भी हर एक सत्य ही होगा। विश्व एक व्यायामशाला है, जहां हम खुद को मजबूत बनाने के लिए आते हैं।जिस दिन आपके सामने कोई समस्या न आए, आप यकीन कर सकते हैं कि आप गलत रास्ते पर सफर कर रहे हैं।यह जीवन अल्पकालीन है, संसार की विलासिता क्षणिक है, लेकिन जो दुसरों के लिए जीते हैं, वे वास्तव में जीते हैं। भगवान की एक परम प्रिय के रूप में पूजा की जानी चाहिए, इस या अगले जीवन की सभी चीजों से बढ़कर। स्वयं में विश्वास करना और अधिक विस्तार से पढ़ाया और अभ्यास कराया गया होता, तो मुझे यकीन है कि बुराइयों और दुःख का एक बहुत बड़ा हिस्सा गायब हो गया होता।बाहरी स्वभाव केवल अंदरुनी स्वभाव का बड़ा रूप है।हम जितना ज्यादा बाहर जाएं और दूसरों का भला करें, हमारा हृदय उतना ही शुद्ध होगा ।युवाओं के प्रेरणादायक स्वामी विवेकानंद का वास्तविक नाम नरेन्द्र नाथ दत्त है। उन्होंने अमेरिका स्थित शिकागो में सन् 1893में आयोजित विश्व धर्म महासभा में भारत की ओर से सनातन धर्म का प्रतिनिधित्व किया था। भारत का आध्यात्मिकता से परिपूर्ण वेदान्त दर्शन अमेरिका और यूरोप के हर एक देश में स्वामी विवेकानन्द के कारण ही पहुँचा। उन्होंने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की थी ,यह संस्था आज भी सक्रिय है। वे रामकृष्ण परमहंस के परमशिष्य थे।

कोलकत्ता के एक कुलीन परिवार में जन्मे स्वामी विवेकानंद आरंभ से ही आध्यात्मिकता की ओर झुके हुए थे। वे अपने गुरु रामकृष्ण देव से काफी प्रभावित थे वे मानव जाति की सेवा को परमात्मा की सेवा मानते थे।स्वामी रामकृष्ण की मृत्यु के बाद विवेकानंद ने भारतीय उपमहाद्वीप का दौरा किया और ब्रिटिश भारत में मौजूदा स्थितियों का प्रत्यक्ष ज्ञान हासिल किया। उन्होने ने संयुक्त राज्य अमेरिका, इंग्लैंड और यूरोप में हिंदू दर्शन के सिद्धांतों का प्रसार किया और कई सार्वजनिक और निजी व्याख्यानों का आयोजन किया।तभी तो आज भी स्वामी विवेकानंद को लोग उनके काम से जानते है।उनकी आध्यात्मिक शक्ति को पहचानते है और युवाओं के लिए प्रेरक मानते है।स्वामी विवेकानंद होने का अभिप्राय ही मानव कल्याण कहा जा सकता है।या फिर युवाओं का आध्यात्मिक शक्ति पुंज भी हम स्वामी विवेकानंद को मान सकते है।

28 जनवरी को पीएम मोदी का उत्तराखंड दौरा

पीएम मोदी करेंगे उत्तराखंड 38वें नेशनल गेम्स का उद्घाटन

देहरादून। 28 जनवरी को पीएम मोदी उत्तराखंड में राष्ट्रीय खेलों का उद्घाटन करेंगे. प्रधानमंत्री इस दौरान राज्य की तमाम बड़ी परियोजनाओं की भी समीक्षा करने वाले हैं. इसके लिए करीब 2 घंटे तय किए गए हैं. जिस दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सामने विभिन्न योजनाओं का प्रेजेंटेशन प्रस्तुत किया जाएगा, इसमें ऋषिकेश, हरिद्वार कॉरिडोर और शारदा कॉरिडोर पर खासतौर से चर्चा होगी. प्रदेश में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दौरे को लेकर धामी सरकार तैयारियों में जुट गई है, एक तरफ राष्ट्रीय खेलों के आयोजन को लेकर अधिकारी तैयारी कर रहे हैं तो दूसरी तरफ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सामने विभिन्न परियोजनाओं पर विस्तृत चर्चा के लिए भी प्रयास किया जा रहे हैं. इनमें खासतौर से ऋषिकेश और हरिद्वार कॉरिडोर के अलावा शारदा कॉरिडोर पर भी बात होगी. इतना ही नहीं बद्रीनाथ मास्टर प्लान और केदारनाथ के पुनर्निर्माण पर अब तक हुए कार्यों की भी रिपोर्ट प्रधानमंत्री के सामने रखी जाएगी. हरिद्वार कॉरिडोर के अंतर्गत हर की पैड़ी से हरिद्वार के डेवलपमेंट का प्लान प्रधानमंत्री के सामने राज्य के अधिकारी रखेंगे. दरअसल काफी समय से राज्य सरकार हरिद्वार में डेवलपमेंट प्लान को तैयार करने में जुटी है और कुंभ क्षेत्र को सुविधाजनक बनाने के लिए सरकार की तरफ से ब्लूप्रिंट भी तैयार किया गया है. राज्य सरकार ने बद्रीनाथ के मास्टर प्लान और केदारनाथ के पुनर्निर्माण के कार्यों पर भी अब तक की रिपोर्ट प्रधानमंत्री के सामने रखने का फैसला लिया है. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सामने पर्यटन विभाग इसे लेकर प्रेजेंटेशन भी देने वाला है. उत्तराखंड सरकार में सचिव नियोजन आर. मीनाक्षी सुंदरम ने बताया कि शारदा कॉरिडोर के अंतर्गत महाकाली नदी और शारदा नदी के लिए भी प्लान तैयार किया गया है, इस पूरे क्षेत्र को पर्यटन से जोड़ने के लिए नई परियोजनाओं को शुरू करने का निर्णय लिया गया है. इस तरह इस पूरे क्षेत्र को भविष्य में विकसित किया जाएगा और इसके लिए अब तक जिन बातों पर चर्चा की गई है. उनकी जानकारी प्रधानमंत्री को दी जाएगी.

गौर हो कि 28 जनवरी से 14 फरवरी तक 38वें राष्ट्रीय खेलों की मेजबानी का मौका उत्तराखंड को मिला है. जिसका उद्घाटन देहरादून के महाराणा प्रताप स्पोर्ट्स कॉलेज में किया जाएगा. उद्घाटन समारोह की तैयारियां जोरों-शोरों से चल रही हैं. उत्तराखंड के लिए उत्तराखंड 38वें राष्ट्रीय खेलों की मेजबानी का पल ऐतिहासिक होगा. जिसका उद्घाटन पीएम नरेंद्र मोदी करेंगे. सीएम धामी ने 38वें राष्ट्रीय खेलों के उद्घाटन के लिए पीएम नरेंद्र मोदी से आग्रह किया था, जिसके लिए प्रधानमंत्री ने हामी भरी है. गौरतलब है कि उत्तराखंड में 38वें नेशनल गेम्स का आयोजन 28 जनवरी से होगा. उद्घाटन समारोह देहरादून होना है. क्लोजिंग सेरेमनी नैनीताल जिले के हल्द्वानी में होगी. हालांकि खुल इवेंट 26 जनवरी से ही शुरू हो जाएंगे. नेशनल गेम्स के खेल उत्तराखंड के 8 जिलों में आयोजित किए जाएंगे. जीटीसीसी नेशनल गेम्स का कैलेंडर भी जारी कर चुकी है. राष्ट्रीय खेलों के इवेंट देहरादून, टिहरी, ऋषिकेश, हरिद्वार, रुद्रपुर, हल्द्वानी, अल्मोड़ा, पिथौरागढ़ और टनकपुर में होंगे. खास बात यह है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी विभिन्न विभागों द्वारा दिए जाने वाले प्रेजेंटेशन के लिए करीब 2 घंटे तक मौजूद रहेंगे. इस तरह उन सभी प्रोजेक्ट्स पर राज्य सरकार अपनी बात रखेगी जिसपर काफी हद तक राज्य सरकार ने होमवर्क पूरा कर लिया है.

ऋषिपाल अध्यक्ष तथा अरविंद बने कॉलेज के प्रबंधक

रुड़की । राजा महेंद्र प्रताप इंटर कॉलेज की नवनिर्वाचित प्रबंध समिति कार्यकारिणी ने गुरुवार को शपथ ली। नई प्रबंध समिति में अध्यक्ष पद पर ऋषिपाल सिंह व अरविंद राठी प्रबंधक पद पर चुने गए। कॉलेज की नवगठित प्रबंध समिति के लिए चुनाव प्रक्रिया संपन कराई गई थी। चुनाव प्रक्रिया निर्विरोध संपन्न हो गई थी जिसमें चुनाव अधिकारी बृजपाल सिंह राठौर ने नवनिर्वाचित प्रबंध समिति की घोषणा की। कार्यकारिणी में अध्यक्ष पद पर ऋषिपाल सिंह, उपाध्यक्ष पद पर विजेंद्र सिंह, प्रबंधक पद पर अरविंद राठी, उपप्रबंधक अशोक कुमार, कोषाध्यक्ष विनोद कुमार, सदस्य पद पर श्याम पाल, मनोज कुमार, राजकुमार, विवेक कुमार, प्रदीप कुमार, विक्रांत कुमार, मनुवीर को निर्वाचित किया गया। बुधवार गुरुवार को कॉलेज परिसर में आयोजित शपथ ग्रहण समारोह में सभी नवनियुक्त निर्वाचित पदाधिकारियों ने शपथ ली। इस दौरान वीर सिंह, डॉ बीएल कुशवाहा, जितेंद्र सिंह, विवेक कुमार, पंकज कुमार, मिंटू, योगेश कुमार, सुभाष कुमार, विपिन कुमार, अरविंद आर्य, नितिन कुमार आदि लोग मौजूद रहे।

23 जनवरी को उत्तराखण्ड में सार्वजनिक अवकाश घोषित

देहरादून । उत्तराखंड निकाय चुनाव के लिए 23 जनवरी को वोटिंग होनी है। वोटिंग से पहले राज्य निर्वाचन आयोग अपनी तमाम तैयारियों में जुटा हुआ है। राज्य निर्वाचन आयोग ने चुनाव ड्यूटी में लगे अधिकारियों के साथ बैठक की और उन्हें जरूरी दिशा-निर्देश भी दिए है। साथ ही घोषणा की है कि 23 जनवरी को वोटिंग के दिन प्रदेश के नगर निकायों में सार्वजनिक अवकाश रहेगा। राज्य निर्वाचन आयुक्त ने सामान्य प्रेक्षकों के साथ बैठक की। बैठक के दौरान राज्य निर्वाचन आयुक्त ने प्रदेश के सभी सामान्य प्रेक्षकों को चुनावी कार्यों और दायित्वों की जानकारी दी। यही नहीं मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग कर सके इसके लिए उत्तराखंड सचिवालय प्रशासन विभाग ने 23 जनवरी को सभी नगर निकायों में सार्वजनिक अवकाश भी घोषित कर दिया है। मतदान के दिन प्रदेश के सभी नगर निकायों में सार्वजनिक अवकाश घोषित किए जाने संबंधित उत्तराखंड शासन ने आदेश भी जारी कर दिए हैं। जारी किए गए आदेश के अनुसार राज्यपाल ने निगोशिएबल इंस्ट्रूमेंट एक्ट 1881 (1881 का एक्ट संख्या-26) की धारा 25 में दिए गए अधिकारों का प्रयोग करते हुए राज्य के सभी नागर स्थानीय निकायों में मौजूद सभी राजकीय कार्यालय, शैक्षणिक संस्थानों, अर्द्ध-निकायों और वाणिज्यिक प्रतिष्ठानों में अवकाश रहेगा। ताकि इनमें काम करने वाले सभी कर्मचारियों के मतदान दिवस 23 जनवरी 2025 को सवेतन सार्वजनिक अवकाश को मंजूरी दी है। इसके साथ ही इस दिन निर्वाचन क्षेत्र में पड़ने वाले कोषागार और उपकोषागार भी बंद रहेंगे। राज्य निर्वाचन आयोग कार्यालय में हुई बैठक के दौरान आयुक्त सुशील कुमार ने कहा कि इस पूरी प्रक्रिया में प्रेक्षकों को महत्त्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने तैनात प्रेक्षकों को स्थानीय निकायों की सामान्य जानकारी साझा करते हुए आदर्श आचार संहिता, प्रत्याशियों द्वारा अधिकतम व्यय की सीमा, मतदान और मतगणना की सामान्य जानकारी दी गई है। साथ ही सम्पूर्ण मतदान प्रक्रिया में प्रेक्षकों की भूमिका भी बताई गई है। इसके अलावा चुनाव के दौरान प्रेक्षकों को ध्यान में रखे जाने वाले बिंदुओं पर भी चर्चा की।

युवाओं को बताए नशे से होने वाले नुकसान

रुड़की । बीएसएम पीजी कॉलेज में बुधवार को एंटी ड्रग सेल समिति की ओर से नशा मुक्ति अभियान के अंतर्गत छात्र-छात्राओं को नशे के नुकसान के बारे में बताया गया। नशे से होने वाले दुष्परिणाम और युवा वर्ग में फैल रही विकृति को रोकने पर भी विचार-विमर्श किया गया। कॉमर्स विभाग के डॉ भरत अरोड़ा ने बताया कि नशा एक ऐसी समस्या है, जिसकी जड़े ज्यादातर घरों तक पहुंच चुकी है। यह बुराई विकराल रूप धारण कर रही है। समाज से इसे उखाड़ फेंकने के लिए हम सभी को अपना योगदान देना होगा। कॉलेज के निदेशक रजनीश शर्मा ने छात्र-छात्राओं को संदेश दिया कि हमें संकल्प करना चाहिए कि हम एक नए विचारों का समाज बनाएं जिनमें इन सामाजिक बुराइयों का कोई स्थान न हो। प्राचार्य मेजर प्रोफेसर गौतम वीर ने छात्र-छात्राओं को नशे से होने वाले नुकसान के बारे में जानकारी दी। कहा कि देश का युवा वर्ग आज नशे की गिरफ्त में फंसता जा रहा है। युवा वर्ग बहुत जल्दी अपना हौसला खो देते हैं जिसका परिणाम यह होता है कि वह डिप्रेशन में चले जाते हैं और फिर वह नशे की गिरफ्त में फंस जाते हैं। एंटी ड्रग सेल की नोडल अधिकारी डॉ अलका तोमर ने कहा कि नशे की लत से पीड़ित लोग एक साथ मिलकर अपनी समस्याओं पर चर्चा करके भी इससे निजात पा सकते हैं।

गंगा पार कर किसानों की फसलें बर्बाद कर रहे हाथी

रुड़की । सुल्तानपुर में गंगा से सटे गांवों में गंगा पार से लगातार हाथी आकर किसानों की फसल बर्बाद कर रहे हैं। वन विभाग पटाखे चलाकर हाथियों को गंगा के उस पार ही रोकने का प्रयास कर रहा है। सुल्तानपुर क्षेत्र के भोगपुर, टांडा भागमल, टांडा मजादा, फतवा बाड़ीटिप गांव में गंगा से सटे किसानो की खेत है। जिसमें चारे की तलाश में हाथी गंगा पार कर किसानों की फसलों को बर्बाद कर रहे हैं लेकिन वन विभाग की ओर से हाथियों को रोकने के लिए कोई पुख्ता इंतजाम नहीं किया है। कुछ पटाखों के सहारे वन विभाग हाथियों को रोकने का प्रयास कर रहा है। किसान साधुराम सैनी, रामकुमार, मोहन कश्यप, नंदराम, कुंवरपाल, नीटू,अंकित, ऋषि पाल गजेंद्र शर्मा, राहुल, पुष्पेंद्र, इलियास, रशी, नीटू आदि किसानों का कहना है कि हर वर्ष बड़ी संख्या में गंगा पार के जंगलों से हाथियों के झुंड चारे की तलाश में उनके खेतों में आकर उत्पाद मचाते हैं। और उनकी सालभर की कमाई को रोंधकर बर्बाद कर देते हैं। लेकिन वन विभाग की ओर से ना तो अभी तक अच्छी प्रकार से तार बाढ़ की है ना हाथियों को रोकने का कोई दूसरा पुख्ता इंतजाम किया है। वन विभाग भोगपुर सेक्शन ऑफिसर अमित कुमार ने बताया कि हाथियों को पटाखे चलाकर रोकने का प्रयास किया जा रहा है।

महात्मा बुद्ध के विचारों को 'आचार' में लाना भी ज़रूरी

तनवीर जाफ़री

हमारा देश भारत को देवी-देवताओं,संतों- ऋषियों व फ़क़ीरों की धरती कहा जाता है। हमारे देश में अलग अलग युग व काल में अनेकानेक देवी देवताओं , महापुरुषों , समाज सुधारक, युग प्रवर्तक व धर्म प्रवर्तकों ने जन्म लिया है। इन महापुरुषों द्वारा सत्य और धर्म के मार्ग पर चलते हुये विश्व को मानवता का सन्देश दिया गया है। ऐसे ही एक महान तपस्वी त्यागी तथा सत्य और अहिंसा का पाठ पढ़ाते हुये पूरी मानवता को जीने की एक नई दिशा दिखाने वाले बौद्ध धर्म के प्रवर्तक भगवान गौतम बुद्ध का नाम भी सर्व प्रमुख है। बौद्ध धर्म कंबोडिया, म्यांमार, भूटान और श्रीलंका में राजकीय धर्म के रूप में अपना स्थान रखता है जबकि थाईलैंड और लाओस में बौद्ध धर्म को विशेष दर्जा हासिल है। चीन, हांगकांग,मकाऊ,जापान,सिंगापुर, ताइवान, वियतनाम,रूस व कलमीकिया में बौद्ध धर्म बहुसंख्य समाज द्वारा अपनाया जाता है जबकि उत्तर कोरिया, दक्षिण कोरिया, नेपाल और भारत में भी बौद्ध समुदाय की बड़ी आबादी रहती है। ईसा पूर्व 563 में नेपाल के लुम्बिनी में जन्मे महात्मा बुद्ध का पूरे विश्व में अपना प्रभाव छोड़ना और उनके अनुयाइयों का विश्वव्यापी विस्तार इस निष्कर्ष पर पहुँचने के लिये काफ़ी है कि वे जनमानस पर अपनी असाधारण छाप छोड़ने वाले एक ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने पूरी इंसानियत को सत्य और अहिंसा का पाठ पढ़ाया।

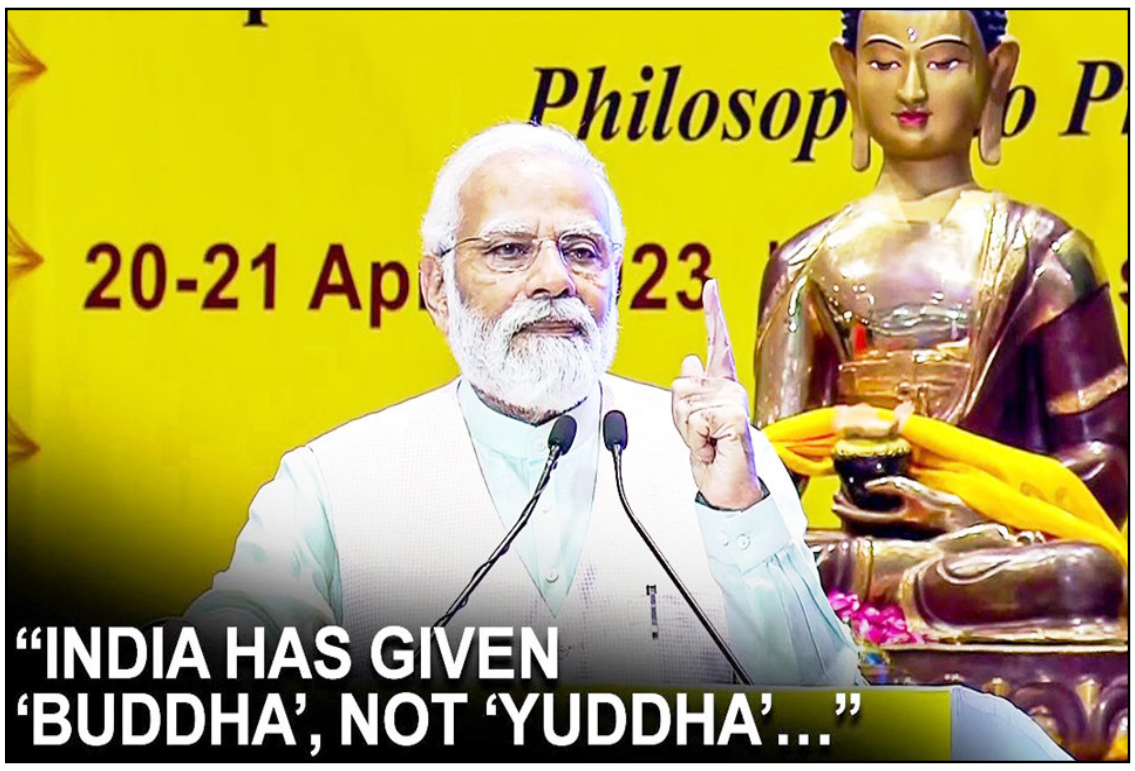

हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी अपने महत्वपूर्ण भाषणों में यहाँ तक कि संयुक्त राष्ट्र संघ में अपने सम्बोधन में भी महात्मा बुध की शिक्षाओं का ज़िक्र करते रहे हैं। नवंबर 2019 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा था कि हम उस देश के वासी हैं जिसने दुनिया को युद्ध नहीं बुद्ध दिये हैं। वे अनेक बार बुद्ध की सत्य और अहिंसा की नीतियों का उल्लेख महत्वपूर्ण मंचों से करते रहे हैं। लगभग 3 माह पूर्व प्रधानमंत्री ने दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय अभिधम्म दिवस को संबोधित करते हुए भी यही कहा था कि दुनिया युद्ध में नहीं बल्कि बुद्ध में समाधान ढूंढ सकती है। दुनिया को शांति के रास्ते पर चलने के लिए बुद्ध की शिक्षाओं से सीखना चाहिए। ऐसे समय में जब दुनिया अस्थिरता से ग्रस्त है, बुद्ध न केवल प्रासंगिक हैं बल्कि एक ज़रूरत भी हैं। इसी तरह पिछले दिनों एक बार फिर प्रधानमंत्री ने ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर में आयोजित 18वें प्रवासी भारतीय दिवस-2025 का उद्घाटन करते हुए बुद्ध की शिक्षाओं को याद किया और कहा कि यह देश अंतरराष्ट्रीय समुदाय को यह बता पाने में सक्षम है कि भविष्य 'युद्ध' में नहीं, बल्कि 'बुद्ध' में निहित है।

सवाल यह है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा दुनिया को युद्ध के बजाये 'बुद्ध' के शांति अहिंसा के विचारों पर चलने व उसे आत्मसात करने का बार बार जो उपदेश दिया जाता है स्वयं उनकी पार्टी के नेता उनके विभिन्न संगठनों से जुड़े लोग क्या 'बुद्ध' की बताई गयी सत्य और अहिंसा की नीतियों का अनुसरण करते भी हैं या नहीं क्या हमारे देश में समय समय पर धर्म,समुदाय व जातियों के नाम पर होने वाली हिंसा और इसे भड़काने वाले नेताओं को बुद्ध की सत्य और अहिंसा की शिक्षा से प्रेरित कहा जा सकता है यह बुद्ध का ही तो कथन है कि भले ही चाहे कितनी अच्छी बातों को पढ़ लें या उन्हें सुन लें उसका तब तक फ़ायदा नहीं है जबतक हम खुद उस पर अमल नहीं करते । और यह भी बुद्ध ने ही कहा है कि बुराई करने वालों को हमेशा अपने पास रखो क्योंकि वही तुम्हारी ग़लतियां तुम्हें बता सकते हैं । बुद्ध की इन शिक्षाओं के सन्दर्भ में बुराई करने वालों को तो छोड़िये सरकार की नीतियों की आलोचना करने वाले विपक्ष व मीडिया से सत्ता कैसे पेश आ रही है क्या यही बुद्ध की नीतियों का अनुसरण है मनमोहन सिंह जैसे क़ाबिल व्यक्ति की ख़ामोशी पर उन्हें मौन मोहन जैसे नाम दे दिये गये और अपनी लफ़्फ़ाज़ियों को ज्ञान वर्षा का मरतबा दिया जाता है। जबकि बुद्ध का कथन है कि -जो लोग ज़्यादा बोलते हैं वे सीखने की कोशिश नहीं करते जबकि समझदार व्यक्ति हमेशा निडर और धैर्यशाली होता है जो समय आने पर ही बोलता है। यह भी बुद्ध का कथन है कि दूसरों की आलोचना करने से पहले, खुद की आलोचना करो।

परन्तु यहाँ तो गाँधी - नेहरू परिवार व ख़ास समुदाय को कोसने से ही फ़ुर्सत नहीं मिलती। साथ ही स्व महिमामंडन इतना कि स्वयं को अवतारी पुरुष बताने से भी नहीं चूकते ऐसे राजनेताओं को बुद्ध का यह कथन ज़रूर याद रखना चाहये कि -जो इर्ष्या और जलन की आग में तपते रहते है उन्हें कभी भी शांति और सच्चा सुख प्राप्त नहीं हो सकता है। और यह भी कि-आप तभी खुश रह सकते है जब बीत गयी बातों को भुला देते है। परन्तु यहाँ तो गड़े मुर्दे उखाड़ कर ही अपनी राजनीति के परचम लहराये जा रहे हैं

इसी तरह म्यांमार के कट्टरपंथी बौद्ध भिक्षु अशीन विराथु को उनके कट्टरपंथी भाषणों व उनके हिंसक तेवरों की वजह से जाना जाता है। स्वयं को महात्मा बुद्ध का अनुयायी ही नहीं बल्कि बौद्ध भिक्षु बताने वाला यह शख़्स केवल आग ही उगलता रहता है। भारत की बहुसंख्यवादी राजनीति की तर्ज़ पर यह भी अपने भाषणों के द्वारा बौद्ध समुदाय की भावना को यह कहकर भड़काने का काम करता है कि मुस्लिम अल्पसंख्यक एक दिन देश भर में फैल जाएंगे। इसी कथित बौद्ध भिक्षु को लेकर टाइम मैगज़ीन ने अपने 1 जुलाई, 2013 के अंक में मुख्य पृष्ठ पर उसकी फ़ोटो दि फ़ेस ऑफ़ बुद्धिस्ट टेरर या बौद्ध आतंक का चेहरा जैसे शीर्षक के साथ प्रकाशित की थी स्वयं को बौद्ध भिक्षु बताने वाले इसी आतंकी अशीन विराथु ने म्यांमार में संयुक्त राष्ट्र की विशेष प्रतिनिधि यांगी ली को कुतिया और वेश्या कहकर सम्बोधित किया था। इस व्यक्ति पर अपने भाषणों के माध्यम से म्यांमार में लोगों को सताने की साज़िश रचने व उनकी सामूहिक हत्या कराने का आरोप लगाया गया है। इस के उपदेशों में वैमनस्यता की बात होती है और इसका निशाना मुस्लिम ख़ासकर रोहंग्या समुदाय ही होता है।

हालांकि बर्मा के अनेक बौद्ध भिक्षु ऐसे भी हैं जो उसके वैमनस्य पूर्ण बयानों से नाखुश हैं।

ऐसे भिक्षु साफ़तौर से यह कहते हैं कि उन्हें यह सब बहुत ख़राब लगता है। इस तरह के शब्दों का प्रयोग किसी बौद्ध भिक्षु को नहीं करना चाहिए। इसी तरह पिछले दिनों श्रीलंका में कट्टरपंथी बौद्ध भिक्षु गालागोडाटे ज्ञान सारा को इस्लाम धर्म का अपमान करने और धार्मिक नफ़रत फैलाने के आरोप में नौ महीने की जेल की सज़ा सुनाई गई है। 2018 में भी ज्ञान सारा को एक आपराधिक मामले में छह साल की सज़ा सुनाई गई थी। दरअसल महात्मा बुद्ध के विचारों की बात करना ही पर्याप्त नहीं बल्कि इन्हें अपने आचार व व्यवहार में लाना भी उतना ही ज़रूरी है।

कांग्रेस को कार्यशैली बदलने की जरुरत

अजीत द्विवेदी

नए साल **2025** को कांग्रेस ने संगठन में बदलाव और मजबूती वाला साल कहा है। कर्नाटक के बेलगावी में 26 दिसंबर को आयोजित कांग्रेस कार्यसमिति की विशेष बैठक में पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि नए साल में कांग्रेस संगठन में बदलाव करेगी और उसे मजबूत बनाने के लिए काम करेगी। इसका एक प्रत्यक्ष अर्थ तो यह दिखाई देता है कि कांग्रेस अध्यक्ष को कहीं न कहीं इस बात का अंदाजा है कि कांग्रेस का संगठन मजबूत नहीं है और लगातार हो रही चुनावी हार के पीछे यह एक कारण है। अगर देश की मुख्य विपक्षी पार्टी संगठन को मजबूत करने के लिए काम करती है तो यह लोकतंत्र के लिए भी अच्छा होगा। परंतु सवाल है कि कांग्रेस अध्यक्ष ने किस तरह के बदलाव की बात की और संगठन को मजबूत करने के लिए किस तरह की पहल की योजना उनके पास है? यह सवाल इसलिए है क्योंकि संगठन में बदलाव का शाब्दिक अर्थ तो यह है कि नए चेहरे लाना और नए लोगों को जिम्मेदारी देना। लेकिन कांग्रेस संगठन की समस्या यह नहीं है। सिर्फ चेहरे बदल देने से कांग्रेस के संगठन में मजबूती नहीं आने वाली है। मजबूती के लिए चेहरों के साथ साथ पूरी कार्यशैली को बदलने की जरुरत होगी। क्या कांग्रेस उसके लिए तैयार है?

अगर शाब्दिक अर्थों में कांग्रेस के संगठन में बदलाव की बात करें तो वह भी बहुत जरूरी है क्योंकि मोटे तौर पर कांग्रेस का संगठन, खासकर प्रदेशों में बहुत कमजोर है या है ही नहीं। यह सचमुच हैरान करने वाली बात है कि कई राज्यों में कांग्रेस का संगठन ही नहीं है। जैसे ओडिशा में छह महीने से कांग्रेस कमेटी नहीं है। लोकसभा और विधानसभा चुनावों में बेहद खराब प्रदर्शन के बाद कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने जुलाई में ओडिशा की प्रदेश कमेटी भंग कर दी थी। इसके तीन महीने बाद छत्तीसगढ़ कांग्रेस विधायक दल के नेता चरणदास महंत की अध्यक्षता में ओडिशा में कांग्रेस नेतृत्व व संगठन की मजबूती के बारे में सुझाव देने के लिए एक कमेटी बनी थी। अभी तक उसकी रिपोर्ट नहीं आई है।

सो, छह महीने से ओडिशा में संगठन नहीं है। इसी तरह नवंबर के पहले हफ्ते में यानी दो महीने पहले हिमाचल प्रदेश कांग्रेस कमेटी को भंग कर दिया गया। पार्टी के संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल ने आदेश जारी किया और प्रदेश से लेकर जिला व प्रखंड स्तर तक की सारी कमेटियां भंग कर दी गईं। इसके एक महीने बाद यानी दिसंबर में उत्तर प्रदेश में प्रदेश से लेकर जिला व प्रखंड तक की कमेटियां भंग कर दी गईं।

विधानसभा चुनाव के नतीजों के बाद महाराष्ट्र व हरियाणा में भी प्रदेश कांग्रेस कमेटी भंग करने की बात चली है। इतना ही नहीं बिहार में करीब दो साल से प्रदेश कमेटी का गठन ही नहीं हुआ है। सितंबर में शुभंकर सरकार पश्चिम बंगाल कांग्रेस के अध्यक्ष बने लेकिन उनकी भी कमेटी नहीं बन पाई है। झारखंड में विधानसभा चुनाव से ठीक पहले अध्यक्ष बने केशव महतो कमलेश भी अपनी कमेटी नहीं बना पाए हैं। सो, बदलाव का एक मतलब तो यह है कि जिन राज्यों में संगठन भंग कर दिया गया है वहां नए अध्यक्ष की नियुक्ति हो और प्रदेश से लेकर जिला व प्रखंड स्तर तक कांग्रेस कमेटियों का गठन हो। दूसरा मतलब यह है कि जिन राज्यों में अध्यक्ष बन गए हैं लेकिन महीनों से उनकी कमेटियों का गठन नहीं हो पाया है वहां नई कमेटियों का गठन किया जाए और तीसरा अर्थ यह है कि जिन राज्यों में कांग्रेस हाल में हारी है वहां अगर बदलाव करना है तो वह जल्दी हो ताकि पार्टी का संगठन काम शुरू कर सके। कुछ राज्यों में कांग्रेस को संगठन के साथ साथ और भी फैसले करने हैं। जैसे कांग्रेस ने हरियाणा और महाराष्ट्र में विधायक दल के नेता का नाम तय नहीं किया है। सोचें, पार्टी चुनाव हार गई या अनुकूल फैसला नहीं आया तो विधायक दल का नेता ही तय नहीं करेंगे?

अगर बदलाव के शाब्दिक अर्थ से अलग हट कर देखेंगे तो कांग्रेस को संगठन की मजबूती के लिए बहुत कुछ करना है। सिर्फ नए अध्यक्ष बना देने या नई कमेटियों का गठन कर देने से कांग्रेस का काम नहीं चलने वाला है। उसे संगठन की कार्यशैली में आमूलचूल बदलाव की जरुरत है। मल्लिकार्जुन खड़गे ने बेलगावी अधिवेशन में इसी तरफ इशारा किया। लेकिन क्या वे इस तरह का बदलाव करने में सक्षम हैं?

भारत को सचमुच एक खुशियों भरे भविष्य की ओर ले गए डॉ. मनमोहन सिंह

श्रुति व्यास

सिर्फ दस साल पहले की बात है, मगर मानों ज़माना गुज़र गया हो। दस साल पहले भारत भूखा था नए विजन, नई दृष्टि का। हर कोई तरक्की और अच्छे दिनों के लिए फडफडाता हुआ था। दस साल पहले लग रहा था, सबकी फील थी, भारत बढ़ रहा है। भारतीय आगे बढ़ रहे हैं।

आज, लफ्फाजी और प्रोपेगेंडा है।

मैं, सन् 2007 में, स्काटलैंड में सेंट एंड्रयूज विश्वविद्यालय में पढ़ती थी। भारत की राजनीति की न सुध थी और न ज्यादा जानकारी। पतझड़ के आखिरी दिनों की एक सर्द दोपहर में, मैं, अंतर्राष्ट्रीय संबंधों पर अपनी टुटोरिअल क्लास शुरू होने का इंतजार कर रही थी। विश्वविद्यालय की इमारत खामोश थी, मानों आराम कर रही हो। सभी लोग लंच के लिए गए हुए थे। मैं लंच और सुकून चैन के मूड में थोड़ी जल्दी वापस पहुंच गई। मेरे अलावा वहां एक और व्यक्ति था, जो अपने कपड़ों से खांटी अमीर,कुलीन अंग्रेज लग रहा था। लेकिन वह था एक मेक्सिकन रईसजादा जो स्विटजरलैंड में रहता था। दुआ-सलाम के बाद हम आमने-सामने बैठ गए और मैं खाना शुरू करने ही वाली थी कि उसने मेरे पर सवाल दागा, क्या तुम्हे इंडियन होने पर गर्व है? मैंने हैरानी और नाराजगी से उसे देखा। वह मेरे चैन, इतमीनान से पैनिनी इम्बोटिटो के स्वाद में खलल थी। वो आंखे फैलाकर लगातार मुझे घूर रहा था। मेरा जवाब जानने को बेताब था। मैंने अपना सैंडविच लपेटते हुए उसकी ओर देखा और बेलौस जवाब दिया, हां, बिलकुल है। लेकिन वो मेरे जवाब से न तो खुश हुआ और ना उसे उस पर भरोसा हुआ। उसने दुबारा पूछा, क्या वाकई तुम्हे गर्व है? (क्या आप सचमुच?) मैंने उसकी ओर सवाल उछाला, क्या तुम्हे अपने मेक्सिकन होने पर गर्व नहीं है। उसने तपाक से कहा नहीं। मैंने हैरानी से उसकी ओर देखा। मैं सोच रही थी कि किसी को अपने देश से प्यार न हो, भला ऐसा कैसे संभव है!

वह भी शायद मेरी ओर देखते हुए सोच रहा था कि इसका उलट कैसे संभव है। इसके पहले कि चर्चा आगे बढ़ती, छात्रों के लौटने का सिलसिला शुरू हो गया। हम दोनों अपने-अपने समूहों से घिर गए और बातचीत यहीं समाप्त हो गई। इसके बाद कभी वह अधूरी चर्चा पूरी न हो सकी।

लेकिन मेरे मन में हमेशा सवाल कौंधता रहा कि उसके मन में ऐसा सवाल क्यों आया?

जब मैं स्काटलैंड गई थी तब भारत द्रुत गति से फल-फूल रहा था जबकि ब्रिटेन मंदी में डूब-उतर रहा था। जैसा कि मैंने विदेशी विश्वविद्यालयों में प्रवेश हेतु आवेदनों में %अपने वक्तव्य' में कहा था, भारत बदलाव के कगार और सबसे तेजी से बढने़ वाली अर्थव्यवस्था बनने की राह पर है। इसमें तब संदेह की कोई गुंजाइश नहीं थी। हमारा शेयर बाजार तेजी से बढ़ रहा था, व्यापार-व्यवसाय में नए प्रयोग हो रहे थे, लोकतंत्र जिंदा था और माहौल उत्साहपूर्ण था। विकसित देशों में रह रहे मेरे मित्र कहते थे, कम से कम तुम्हारे पास तो वापस जाने का विकल्प है ही। भारत में आसानी से तुम्हे काम मिल

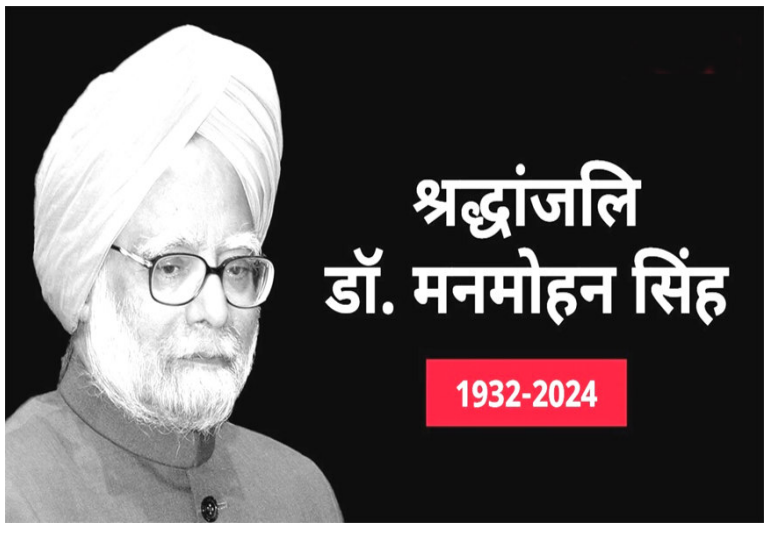

जाएगा। मैं गर्वित और अच्छा फील करती थी। भारत बदल रहा था और हरेक व्यक्ति इसे देख और महसूस कर सकता था।

जब मैं बड़ी हो रही थी तब भी मुझे कभी ऐसा नहीं लगा कि ऐसी कोई चीज है जो मैं खो रही हूं, जो मेरे पास नहीं है। निश्चित तौर पर कुछ नियम-कानून और प्रतिबंध थे, जिनका पालन हमें करना पड़ता था। मगर जिंदगी इतनी बुरी भी नहीं थी। एक बच्ची बतौर मेरा जीवन उदास नहीं था। हम रोज एक घंटे कम्प्यूटर का इस्तेमाल कर सकते थे और शाम को केबिल टीवी देख सकते थे, हमें स्कूल ले जाने के लिए कार थी और समय-समय पर हमें नए आधुनिक खिलौने और गेम मिल जाते थे। ये सभी उस समय भारत में आसानी से उपलब्ध थे। हम लोगों को सिनेमा भी ले जाया जाता था और छुट्टियों में हम शहर के बाहर भी जाते थे।

आज जब मैं पीछे मुडक़र उस दौर को याद करती हूं तो मुझे लगता है कि हमारा बचपन खुशनुमा इसलिए था क्योंकि उस दौर में भारत और भारतीय दोनों खुश थे, फालतू की चिंताएं नहीं थी। सब आगे बढ़ रहे थे।

और तब उस समय, उसके पीछे थे डॉ. मनमोहन सिंह।

मुझे सन् 2004 की धुंधली यादें हैं जब सुषमा स्वराज ने एक बड़ा तमाशा किया था। उन्होंने धमकी दी थी कि अगर सोनिया गांधी प्रधानमंत्री बनी तो वे अपना सिर मुंडवा कर सन्यासिन बन जाएंगीं। मुझे यह भी याद है कि किस तरह सोनिया गांधी ने विपक्ष के भारी शोर-शराबे के बीच यह सिद्ध किया था कि उनका कद उन सबसे ऊंचा है। उन्होंने साफ़ कहा कि वे प्रधानमंत्री बनना नहीं चाहतीं और यह जिम्मेदारी उन्होंने डॉ. मनमोहन सिंह को सौंपने की घोषणा भी की। इस एक्सीडेंटल प्राईम मिनिस्टर ने उसी दिन कहा था कि हम भविष्य को खुशियों से भर देंगे और यही हुआ भी। प्रधानमंत्री बतौर वे भारत को सचमुच एक खुशियों भरे भविष्य की ओर ले गए। दुनिया में तब भारत पर विश्वास था।

सन् 1991 में उन्होने जो बीज बोए थे उनकी फसल काटने का वक्त आ चुका था। सन् 2004 से लेकर 2014 तक प्रधानमंत्री बतौर अपने कार्यकाल में उन्होंने भारत को आधुनिकता और समृद्धि के रास्ते पर आगे बढ़ाया। उसे पहले से ज्यादा शक्तिशाली बनाने में भी योगदान दिया। उनके कार्यकाल में अर्थव्यवस्था नौ प्रतिशत की गति से बढ़ी। इतना ही नहीं भारत को लंबे समय बाद अंतर्राष्ट्रीय मंच पर रुतबा हासिल हुआ। उन्होंने अमेरिका के साथ ऐतिहासिक परमाणु संधि की। आईटी सेवाओं के निर्यात के कारण देश में ढ़ेर सारे डालर आ रहे थे। 1991 के मध्य में भारत का विदेशी मुद्रा भंडार करीब एक अरब डालर का था। उनके कार्यकाल की समाप्ति के समय इस भंडार में 280 अरब डालर थे और अब उसके करीब दो गुना हैं। भारत शाईन कर रहा था और भारतीयों के चेहरों पर भी चमक थी - भारत में भी और विदेश में भी।

हमारे साथ कहीं दोयम दर्जे के नागरिकों जैसा व्यवहार नहीं होता था। हमें सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। देश जिस तेज गति से आगे बढ़ रहा था उसे भी दुनिया प्रशंसा की निगाह से देख रही थी। हम चीन से मुकाबिल थे और विकसित देशों के क्लब की सदस्यता हासिल करने की ओर बढ़ रहे थे। आर्थिक मामलों की डॉ मनमोहन सिंह की समझ और उनकी बृद्धिमत्ता ने उन्हें पूरी दुनिया में सम्मान का पात्र बनाया था। देश में एक तरह का चैन और सुकून था। सबको पता था कि शीर्ष पर बैठा आदमी समाज को बांटने वाला नहीं है, वह लोगों को आपस में लड़ाना नहीं चाहता और उसके राज में किसी को भी असुरक्षित महसूस करने की जरूरत नहीं है।

उन दिनों मैं भारतीय राजनीति से दूर थी परंतु मुझे यह जरूर याद है कि उस दौर की राजनीति परिपक्व थी, अर्थपूर्ण थी और काफी तक विचारधारा पर आधारित थी। दिल्ली संकीर्ण सोच वाले बेईमान राजनीतिज्ञों से भरी नहीं थी और ना ही राजनीति का उद्धेश्य केवल अपनी भलाई करना था। संसद में भी एक तरह का खुलापन था। सरकार अपनी आलोचना सुनने को तैयार थी - चाहे वह आलोचना विपक्ष कर रहा हो या प्रेस। संसद में शेरो-शायरी होती थी और असहमतियां, सहमतियों में और सहमतियां, असहमतियों में बदलती रहतीं थीं। सबकी अपनी-अपनी वफादारियां थीं और अपनी-अपनी पसंद-नापसंद भी, मगर एक-दूसरे से नफरत का भाव नहीं था।

मैंने डॉ सिंह और प्रधानमंत्री के रूप में उनके कार्यकाल का बहुत विस्तार से अध्ययन नहीं किया है लेकिन मैं एक बात जानती हूं और वह यह कि उन्होंने मुझे फलती-फूलती अर्थव्यवस्था पर गर्व करने का मौका दिया। सन् 1991 के आर्थिक सुधारों के बाद से भारतीयों को लगने लगा था कि उनके बच्चों का जीवन उनके जीवन से बेहतर होगा। उस समय भारत सपने देख रहा था। उसके दिल में ढेर सारी महत्वाकांक्षाएं हिलोरें मार रहीं थीं। आने वाला समय खुशनुमा और सुनहरा लग रहा था।

परंतु अच्छा दौर बहुत लंबा नहीं चलता। जब मैं भारत वापिस आई तब तक मनमोहन सिंह का सुनहरा काल और उस दौर की राजनीति अस्त हो चली था। भ्रष्टाचार के ढेर सारे आरोप थे और झूठ का बहुत बड़ा जाल बुना जा चुका था। अपने दूसरे कार्यकाल में वे अधिकांश समय चुप्पी साधे रहे। उनका खूब अपमान हुआ। जो काम उन्होंने किया था, उसे भुला दिया गया। उन्हें शर्मिंदा किया गया और उन पर एक नाकाम प्रधानमंत्री का लेबल चस्पा कर दिया गया। मगर वे कभी अपने विरोधियों के स्तर पर नहीं उतरे। सन् 2014 में यह घोषणा करते समय कि वे तीसरा कार्यकाल पाने की कोशिश नहीं करेंगे उन्होंने मुस्कराते हुए लेकिन मजबूती से कहा था कि आज के मीडिया या विपक्ष की तुलना में इतिहास मेरे प्रति अधिक उदार होगा।

उनके शब्द कितने सही थे! उनकी मृत्यु ने आज भारतीयों को उस पुराने दौर को याद करने को मजबूर कर दिया है। वह समय इतना अच्छा था कि आज वह सपने जैसा अवास्तविक लगता है। केवल एक दशक पहले हमारे पास एक ऐसा प्रधानमंत्री था जो सत्ता के पीछे पागल नहीं था। बल्कि उसने हम सबको थोड़ी-थोड़ी सत्ता देने का प्रयास किया। हमारे पास एक ऐसा प्रधानमंत्री था जिसकी जबरदस्त आलोचना हुई पर जो कभी प्रेस का सामना करने में नहीं हिचकिचाया; एक ऐसा प्रधानमंत्री जिसने विपक्ष के गुस्से का खुलकर सामना किया; एक ऐसा प्रधानमंत्री जो चुप्पी साधे रहा ताकि उसके आसपास के लोग उसकी निंदा कर सकें, उसे खरी-खोटी सुना सकें, उससे असहमत हो सकें और उसके प्रति अपने गुस्से का इजहार कर सकें। जिस समय डॉ सिंह पर चौतरफा हमले हो रहे थे तब रामचंद्र गुहा ने कहा था कि इतिहास में मनमोहन सिंह का नाम भारत के पहले सिक्ख प्रधानमंत्री के तौर पर तो दर्ज होगा ही मगर एक ऐसे प्रधानमंत्री के तौर पर भी दर्ज होगा जिसे यह नहीं मालूम कि उसे कब रिटायर हो जाना चाहिए। गुहा ने कहा था, यह साफ है कि वे थके हुए हैं, गाफिल हैं और उनमें जरा सी भी ताकत नहीं बची है। यह सही हो या गलत मगर एक बात तो तय है कि आज जिस भारत को डॉ सिंह अपने पीछे छोड़ गए हैं, वह सचमुच थका हुआ है, गाफिल है और उसमें जरा सी भी ताकत नहीं बची है। न कोई जोश है और न सुकून और न सुख। चंद लोग आगे बढ़ रहे हैं और हम सब केवल पुराने दिनों को याद कर रहे हैं। हमें बताया गया है कि हम अमृत काल में जी रहे हैं। लेकिन न तो हमारी थाली में और न हमारी कटोरी में अमृत की एक भी बूंद है।

और मैं जानती हूं कि यदि आज वह मेक्सिकन मुझसे पूछे कि क्या मुझे %इंडियन' होने पर गर्व है तो मैं उसे इस बेसिरपैर का प्रश्न पूछने के लिए उसे तुनक कर बुरा-भला कहूंगी। मैं उससे कहूंगी कि क्या उसे नहीं मालूम कि भारत दुनिया की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। मगर मैं यह भी जानती हूं कि मेरे %तुनकने' के पीछे जो अनकहा है, उसे वह समझ जाएगा। हम दोनों एक-दूसरे की तरफ देखेंगे, हम दोनों को एक-दूसरे के प्रति सहानुभूति महसूस होगी और मुझे तब समझ आ जाएगा कि वह खुद भी मेक्सिकन होने में गर्व का अनुभव क्यों नहीं करता।

देश के दुलारे सनातन धर्म की सच्ची शिक्षा इन्द्रेश जी

वृंदावन की व्यासपीठ के 26 वर्षीय युवा इंद्रेशजी जनमानस के आत्मविकास में लगे हुए हैं। भक्तिपथ पर चलने वाले इंद्रेश जी जब वृंदावन प्यारो वृंदावन गाते हैं तो सुनने वाले स्वभाव में वृंदावन ही पहुंच जाते हैं। वे सुर-राग के धनी हैं तो रस-भाव के भी धनी हैं। इन्द्रेश जी के छवि चित्र में ही उनका चरित्र भाव दिखता है। आज जब पंथ-जमात के कई प्रतिष्ठित हुए व लोकप्रिय माने गए गुरु जेल में अपने कर्मों की सजा भुगत रहे हैं तो भागवत कथाकार इन्द्रेश जी सभी का मन मोह रहे हैं। नया साल नई संभावनाएं लिए आता है। समय कैसा भी रहे अपन समाज के प्रति अपनी आशा तो बनाए रख ही सकते हैं। समाज से संवाद तो चलाया जा ही सकता है। समाज से ही निकले सभ्य-सुशील लोग नयी समय-समझ गढने़ में भी लगते हैं। उनके नए संवाद से भी समाज की समझ बनती-बढ़ती है। इसलिए आशा है समाज में श्रद्धा, सौहार्द और विवेक का माहौल बने। भौतिक विकास के साथ आत्मिक विकास भी हो। वृंदावन की व्यासपीठ के 26 वर्षीय युवा इंद्रेश जी जनमानस के आत्मविकास में लगे देखे जा सकते हैं। किसी का भी अस्तित्व तो उसकी सच्ची आस्था के आत्मविश्वास से ही प्रकट होता है। वही आस्था जो हमारे जीवन के अर्थ व हमारे रोजमर्रा के कामों से प्रदर्शित होती है। और फिर हमारे वही अर्थपूर्ण कामकाज ही हमें प्रतिष्ठित व लोकप्रिय बनाते है। मगर आकार से न हमारा अस्तित्व तय होता है न ही संख्या से हमारी सार्थकता। आज जब पंथ-जमात के कई प्रतिष्ठित हुए व लोकप्रिय माने गए गुरु जेल में अपने कर्मों की सजा भुगत रहे हैं तो भागवत कथाकार इन्द्रेश जी सभी का मन मोह रहे हैं। इसलिए सारे देश में इंद्रेश जी, इंद्रईश दुलारे हो गए हैं। पिछले दिनों इन्द्रेश जी ने चंडीगढ़ में वृंदावन प्रकट उत्सव मनाया। वृंदावन का महिमामृत व भाव कहा व गाकर सुनाया। चंडीगढ़ के ही लोकप्रिय गायक-संगीतकार बी-प्राक ने इन्द्रेश जी को रस, रास और राग के महात्म्य के लिए बुलाया था। वृंदावन प्रकृति-प्रेम का प्रतीक है तो कुरुक्षेत्र गीता-ज्ञान का रणक्षेत्र। उसी से लगे चंडीगढ़ में इन्द्रेश जी वृंदावन के राधाकृष्ण प्रेम को उत्सव रूप में प्रकट कर रहे थे। अपने रसमय भागवत प्रेम के कथा-पाठ के साथ रागमय संगीत रच रहे थे। इन्द्रेश जी परंपरा से प्राप्त कृष्ण-प्रेम को नए युवाओं के लिए नवोदित चिंतन प्रदान करने में लगे हैं। बृज की सरससता से देश में समरसता जगाने में लगे हैं।

-संदीप जोशी

इंस्टाग्राम अकाउंट हैक होने पर चाहत खन्ना ने दी प्रतिक्रिया

टेलीविजन अभिनेत्री चाहत खन्ना ने हाल ही में अपने इंस्टाग्राम अकाउंट के हैक होने के बारे में बात की। बड़े अच्छे लगते हैं में काम कर मशहूर हुई अभिनेत्री ने बताया कि अकाउंट हैक होना और फॉलोअर्स का तेजी से घटना उनके लिए काफी चौंकाने वाला रहा। काफी प्रयास और सुरक्षा प्रोटोकॉल की मदद से खन्ना का अकाउंट रिकवर हो चुका है। हालांकि, हैक के बाद लगभग 2.5 मिलियन फॉलोअर्स उन्हें अनफॉलो कर चुके हैं।

अभिनेत्री ने कहा, यह मेरे लिए काफी चौंकाने वाला था। सब कुछ ठीक रखने और जांच करने के बावजूद, हैकर्स किसी तरह मेरे अकाउंट तक पहुंच गए। मेटा टीम ने जल्द से जल्द मेरा अकाउंट रिकवर करने में मदद की। हालांकि, मुझे इस सब के बीच लगभग 2.5 मिलियन फॉलोअर्स की गिरावट दिखी और यह काफी अजीब रहा। हैकिंग तुर्की में होने का संदेह है।

चाहत खन्ना के इंस्टाग्राम पर 3.7 मिलियन फॉलोअर्स हैं।

अभिनेत्री ने मेटा टीम को धन्यवाद देते हुए आगे लिखा, जल्द से जल्द मेरे अकाउंट तक पहुंच वापस पाने में मेरी मदद करने के लिए मेटा की टीम का शुक्रिया। उम्मीद है कि अब सब ठीक रहेगा।

बता दें कि यह कोई पहली बार नहीं है जब अभिनेत्री साइबर क्राइम का शिकार हुई हैं। इससे पहले साल 2020 में चाहत खन्ना साइबर क्राइम का शिकार हो गई थीं। उनके सोशल मीडिया अकाउंट को एक पुराने दोस्त ने हैक कर लिया था। रिपोर्ट्स के मुताबिक, अभिनेत्री ने खुलासा किया कि हैकिंग के लिए जिम्मेदार व्यक्ति उनका पूर्व मित्र था, जिसके साथ उनका झगड़ा हो गया था। चाहत ने घटना के संबंध में पुलिस में शिकायत दर्ज कराई।

पिछले महीने, खन्ना ने दुबई में अपने ब्वॉयफ्रेंड रोहन गंडोत्रा के साथ छुट्टियां मनाते हुए अपनी तस्वीरें शेयर करके सुर्खियां बटोरी थी। हालांकि चाहत ने रोहन के साथ अपने रिश्ते की आधिकारिक पुष्टि नहीं की है, लेकिन साथ में उनका लगातार छुट्टियां मनाना और सार्वजनिक रूप से दिखना इस बात का संकेत है कि वे रिलेशनशिप में हैं।

चाहत खन्ना के वर्कफ्रंट की बात करें तो अभिनेत्री ने टीवी शो हीरो-भक्ति ही शक्ति है से अपनी अभिनय की शुरुआत की थी। उन्होंने कई लोकप्रिय शो में काम किया है, जिनमें कुमकुम-एक प्यारा सा बंधन, काजल, बड़े अच्छे लगते हैं, क़ुबूल है के साथ अन्य शोज के नाम शामिल हैं। टेलीविजन के अलावा चाहत कई विज्ञापनों और फिल्मों में भी काम कर चुकी हैं। अभिनेत्री साल 2023 में रिलीज हुई फिल्म यात्री में भी काम कर चुकी हैं।

आला रे देवा आला रे, शाहिद कपूर की देवा का खौफनाक टीजर रिलीज

शाहिद कपूर अपनी आने वाली फिल्म देवा के साथ सिल्वर स्क्रीन पर धमाल मचाने के लिए पूरी तरह तैयार हैं. फिल्म के लिए पहले से ही काफी एक्साइटमेंट है, वहीं अब मेकर्स ने एक्शन-एंटरटेनर का टीजर रिलीज करके दर्शकों के बीच एक्साइटमेंट बढ़ा दिया है. 5 जनवरी को मेकर्स ने सभी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर फिल्म का टीजर रिलीज किया. 052 मिनट का टीजर हमें अलग ही सिनेमैटिक एक्सपीरियंस देता है. हम शाहिद कपूर को एक पुलिस अधिकारी के रूप में हार्ड-कोर एक्शन करते हुए देख सकते हैं, जबकि पूजा हेगड़े अपनी मौजूदगी से इसमें मसाला डालने का काम करती हैं.

अपकमिंग एक्शन थ्रिलर देवा से शाहिद कपूर बड़े पर्दे पर कमबैक करने जा रहे हैं वो भी खाकी वर्दी में. दिलचस्प बात यह है कि टीजर में कोई डायलॉग नहीं है लेकिन कहानी कहने के लिए सिर्फ शाहिद के एक्सप्रेशन ही काफी हैं. शाहिद का ट्रेडमार्क स्वैग और एक्शन और डांस सीक्वेंस में उनके मूव्स दर्शकों का दिल जीत रहे हैं. 52 सेकंड का टीजर, हाई-ऑक्टेन एक्शन, मदहोश कर देने वाले डांस मूव्स और एक एंटरटेनिंग कहानी से भरी फिल्म का दावा करता हैं.

प्रोमो की शुरुआत शाहिद के डांस फ्लोर पर अपना जलवा दिखाने से होती है जहां मौजूद भीड़ उनका उत्साह बढ़ा रही है. उनके डांस मूव्स उनके कैरेक्टर के बारे में बहुत कुछ कह रहे हैं. व्हाईट शर्ट पहने, उन्होंने इसे वर्दी की पैंट, जूते और एक पिस्तौल के साथ पेयर किया. शाहिद एक निडर पुलिस वाले की भूमिका निभाते हैं. इस इंटेंस अवतार में एक्टर ने ऐसे बेहतरीन और अनफिल्टर्ड एक्शन सीक्वेंस दिए हैं जो दर्शकों को अपनी सीट से बांधे रखने का वादा करते हैं. हाई-स्पीड चेज से लेकर एड्रेनालाईन-पंपिंग फाइट सीक्वेंस तक, शाहिद हर सीन में जान डालते हुए दिखते हैं. आखिरी में टीजर बॉलीवुड के शहंशाह अमिताभ बच्चन और उनकी विरासत को भी श्रद्धांजलि देता है, जिसमें शाहिद कपूर प्रो एंग्री मैन के रूप में दिखाई देते हैं.

फिल्म में शाहिद के साथ पूजा हेगड़े, पावेल गुलाटी, प्रवेश राणा और कुब्रा सैत खास रोल प्ले कर रहे हैं. देवा 31 जनवरी 2025 को रिलीज होने जा रही है.

अल्लू अर्जुन की पुष्पा 2 ने रचा इतिहास

अल्लू अर्जुन की फिल्म 5 दिसंबर को सिनेमाघरों में रिलीज हुई थी. रिलीज होते ही फिल्म ने रिकॉर्ड पर रिकॉर्ड तोड़े. आज 5 जनवरी को फिल्म को रिलीज हुए एक महीना पूरा हो गया है और अभी भी सिनेमाघरों में पुष्पा 2 को देखने का क्रेज छाया हुआ है. पहले से कमाई कम हुई है लेकिन अभी भी पुष्पा 2 अच्छे खासे नोट छाप रही है. तो आइए जानते हैं 31 वें दिन की पुष्पा 2 की कमाई.

पुष्पा 2 ने 24 करोड़ के साथ धमाकेदार ओपनिंग की थी इसके साथ ही पुष्पा 2 हिंदी पट्टी में भी सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्म बन गई है. वहीं घरेलू बॉक्स ऑफिस पर भी पुष्पा 2 सबसे ज्यादा कमाने वाली फिल्म बन गई है. अब सिर्फ वर्ल्डवाइड कमाई में पुष्पा दंगल से पीछे है. पुष्पा 2 ने 31 वें दिन 5.5 करोड़ की कमाई की इसी के साथ इसका टोटल घरेलू कलेक्शन 1200 करोड़ हो गया है. शनिवार को फिल्म ने हिंदी में 4.35 करोड़ कमाए वहीं तेलुगु में 1 करोड़ की कमाई की. तेलुगु में फिल्म की 14.81त्न ऑक्यूपेंसी रही. वहीं हिंदी में 16.08त्न ऑक्यूपेंसी दर्ज की गई. पुष्पा 2 रिलीज के बाद से ही एक के बाद एक रिकॉर्ड तोड़ रही है. घेरलू बॉक्स ऑफिस पर सबसे ज्यादा कमाई के साथ ही इसने हिंदी पट्टी में भी सबसे ज्यादा कमाई की है. पुष्पा 2 ने बाहुबली 2 का रिकॉर्ड भी तोड़ दिया है. अब अल्लू अर्जुन की फिल्म से आगे है सिर्फ आमिर खान की दंगल जिसने वर्ल्वडवाइड 2000 करोड़ की कमाई की थी. वहीं पुष्पा 2 ने वर्ल्डवाइड बॉक्स ऑफिस पर 1800 करोड़ का आंकड़ा पार कर लिया है. फिलहाल पुष्पा 2 के पास 10 जनवरी तक का समय है जहां वह और पैसे कमा सकती है क्योंकि इस दिन राम चरण की गेम चेंजर रिलीज होने जा रही है. जिसका असर पुष्पा 2 की कमाई पर पड़ सकता है. फिलहाल अल्लू अर्जुन की फिल्म को वर्ल्डवाइड 200 करोड़ का सफर और तय करना है जो कि मुश्किल तो नहीं है लेकिन इतना आसान भी नहीं है. इन पांच दिनों में पता चल जाएगा कि पुष्पा 2 आमिर खान की दंगल का रिकॉर्ड तोडने में कामयाब होती है या नहीं.

विक्रमादित्य मोटवानी की ब्लैक वारंट का ट्रेलर जारी, तिहाड़ जेल की दीवारों के पीछे की कहानी, शशि कपूर के पोते का डेब्यू

भारतीय सिनेमा के जाने-माने निर्देशक विक्रमादित्य मोटवानी की आगामी फिल्म ब्लैक वारंट का दमदार ट्रेलक आज रिलीज हो चुका है। इस सीरीज में कुणाल कपूर के बेटे और शशि कपूर के पोते जहान कपूर मुख्य भूमिका में नजर आएंगे। इसमें वह तिहाड़ के जेलर रहे सुनील गुप्ता का किरदार निभा रहे हैं।

निर्माताओं ने ब्लैक वारंट का ट्रेलर जारी कर प्रशंसकों के बीच उत्साह पैदा कर दिया है। प्रशंसकों को ब्लैक वारंट का ट्रेलर खूब पसंद आ रहा है। जहान की अदाकारी की काफी तारीफ हो रही है। वेब सीरीज ब्लैक वारंट का प्रीमियर 10 जनवरी, 2025 को ओटीटी प्लेटफॉर्म नेटफ्लिक्स पर किया जाएगा।

निर्माताओं ने ट्रेलर शेयर करते हुए लिखा, तिहाड़ की भयानक जेल में कौन डर जाएगा और कौन लड़ जाएगा? कुछ वास्तविक घटनाओं पर आधारित। इसकी कहानी लेखक सुनील गुप्ता की लोकप्रिय किताब ब्लैक वारंट पर आधारित है। विक्रमादित्य मोटवानी इस सीरीज के सह-निर्माता भी हैं। जहान के अलावा इस सीरीज में अभिनेता राहुल भट्ट, परमवीर सिंह चीमा, अनुराग ठाकुर, सिद्धांत गुप्ता और राजश्री देशपांडे समेत कई अन्य कलाकार नजर आएंगे।

क्या आप भी मच्छर भगाने वाली लिक्विड मशीन का करते हैं यूज

मच्छरों से बचने के लिए लोग काफी सारी चीजों का इस्तेमाल करते है. वहीं इस चीज में सबसे ज्यादा इस्तेमाल लिक्विड मशीन का इस्तेमाल करते है क्योंकि मॉस्किटो ब्रीडिंग काफी ज्यादा बढ़ जाती है. लेकिन क्या आप जानते है इसका रोजाना यूज करना सेहत के लिए कितना ज्यादा हानिकारक हो सकता है.

जो लिक्विड मॉस्किटो किलर केमिकल्स पर बेस्ट होते हैं, वो मच्छरों को मारती हैं, लेकिन हम इन्हें सांस से लेते है. जिससे हमारे शरीर पर काफी ज्यादा नकारात्मक प्रभाव पड़ता है. आइए आपको बताते है कि इसका ज्यादा इस्तेमाल करने से हमारे शरीर पर काफी नुकसान पहुंचता है.

अस्थमा या सांस लेने में दिक्कत

मच्छर भगाने वाली लिक्विड मशीनों में कई हानिकारक केमिकल्स होते हैं, जैसे प्रलैथ्रिन और एलेथ्रिन, जो सांस के जरिए हमारे शरीर में प्रवेश कर सकते हैं. ये रिस्पिरेटरी सिस्टम पर नेगेटिव इफेक्ट डाल सकते हैं. जिन लोगों को पहले से अस्थमा या सांस लेने में दिक्कत होती है, उनके लिए ये समस्या और गंभीर हो सकती है.

त्वचा में जलन

लिक्विड में जो चीज होती है उसकी रसायन त्वचा और आंखों पर काफी बुरा असर डालती है. वहीं लंबे समय तक इससे संपर्क में रहने से त्वचा पर जलन, खुजली इसके अलावा लाल चकत्ते भी हो सकते हैं. इसी तरह आंखों में जलन और खुजली की दिक्कत हो सकती है.

नर्वस सिस्टम कमजोर

अगर आप लंबे टाइम तक लिक्विड मशीन का इस्तेमाल करते हैं, तो इससे आपके नर्वस सिस्टम पर काफी ज्यादा असर पड़ता है. वहीं काफी बार लोग इससे चिड़चिड़ापन, थकान और मानसिक तनाव जैसी दिक्कते महसूस करते हैं.

सिर दर्द और चक्कर

लिक्विड मॉस्किटो किलर से निकलने वाली गंध कई लोगों को सिर दर्द या चक्कर आने की समस्या दे सकती है. खासकर अगर कमरे में अच्छी तरह से वेंटिलेशन न हो, तो इसकी गंध और ज्यादा नुकसानदायक हो सकती है.

इम्यूनिटी कमजोर होना

इससे बच्चों और बुजुर्गों की इम्यूनिटी कमजोर होती है. ऐसे में मच्छर भगाने वाले लिक्विड के रसायनों का उन पर काफी ज्यादा प्रभाव पड़ता है. बच्चों में एलर्जी, सांस की समस्या और अन्य शारीरिक समस्याएं पैदा हो सकती हैं.

जीभ से कैसे पता चलती है बीमारी

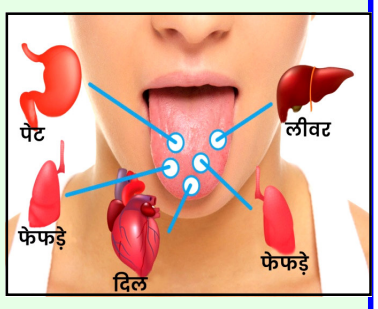

बीमारी होने पर जब आप डॉक्टर को दिखाने जाते हैं तो वो सबसे पहले आपकी जीभ देखते हैं. क्या आपने कभी सोचा है कि ऐसा डॉक्टर जीभ क्यों देखा करते हैं. दरअसर, हमारी जीभ कई बीमारियों को पहले ही बता देती है. आप खुद भी जीभ में होने वाले बदलावों को देखकर पता कर सकते हैं कि आपको कोई बीमारी तो नहीं होने वाली है. एक्सपर्ट्स का कहना है कि अगर जीभ किसी बीमारी का संकेत दे रहा है तो उसे नजरअंदाज नहीं करना चाहिए, क्योंकि कई बार यह गंभीर भी हो सकता है.

सफेद छाले होना

जीभ पर सफेद छाले होना बताता है कि पेट में गड़बड़ी है. पाचन में दिक्कत होने के बाद कई बार जीभ पर लाल या सफेद छाले हो जाते हैं. इसका इलाज तुरंत कराना चाहिए, इसे कभी भी इग्नोर नहीं करना चाहिए.

जीभ पर पीले रंग की कोटिंग

अगर जीभ पर सफेद रंग की हल्की सी कोटिंग है तो इसका मतलब आप हेल्दी हैं लेकिन अगर यही कोटिंग पीले रंग की है तो सावधान हो जाना चाहिए, क्योंकि पीले रंग की हल्की मोटी कोटिंग यीस्ट इंफेक्शन की तरफ इशारा करती है.

ज्यादा सॉफ्ट जीभ

अगर जीभ का रंग गाढ़ा लाल है या वह काफी मुलायम महसूस हो रही है तो इसका मतलब है कि शरीर में विटामिन बी12 और आयरन की कमी है. इसकी जानकारी डॉक्टर के पास जाकर लेनी चाहिए.

गहरी लाल रंग की जीभ

जीभ का गहरा लाल होना इंफेक्शन का लक्षण हो सकता है. कई बार कावासाकी बीमारी या लाल बुखार की वजह से भी ऐसा हो सकता है. अगर यह हल्की सफेद नजर आए तो एनीमिया का संकेत हो सकता है.

लाल जीभ पर सफेज स्पॉट

तंबाकू, सुपाड़ी खाने वालों की जीभ पर सफेद स्पॉट पड़ जाते हैं. कई बार ज्यादा तला भुना खाने से एसिड की मात्रा बढ़ जाती है और ऐसा हो सकता है. अगर एक दो हफ्ते बाद भी यह खत्म न हो तो तुरंत डॉक्टर से जाकर मिलना चाहिए.

जीभ चिकनी होना

जीभ का ऊपरी हिस्सा हल्का खुरदुरा होता है. अगर यह अचानक से चिकना हो जाए तो विटामिन की कमी के लक्षण हो सकते हैं. शरीर में पोषक तत्वों की कमी की वजह से भी ऐसा हो सकता है.

सेब को छीलकर खाना चाहिए या बिना छीले?

सेब खाना सेहत के लिए काफी फायदेमंद होता है. सेब के छिलके में फाइबर, विटामिन-ए, एंटी-ऑक्सीडेंट्स और कार्ब्स से भरपूर होता है. ऐसे में अगर आप सेब को छीलकर खाते हैं तो कुछ पोषक तत्व कम हो जाते हैं, इसलिए सेब को छिलके समेत खाना ज़्यादा फ़ायदेमंद होता है. ऐसे आज हम आपको बताएंगे सेब को छीलकर खाना चाहिए या बिना छीले? आइए जानते हैं सेब खाने के सही तरीके के बारे में.

सेब को बिना छीले खाना के फायदे

सेब के छिलके पोषक तत्वों से भी भरपूर होते हैं, जो आपके पेट को लंबे समय तक भरा रखते हैं. एक्सरसाइज के साथ अगर आप कैलोरी के सेवन को कम करते हैं, तो यह आपकी वजन् घटाने में काफी मदद करते हैं.

सेब का छिलका वजन् घटाने में काफी मददगार होता है. इसमें मौजूद फाइबर है आपके लिवर को स्वस्थ बनाए रखने में मदद करता है. साथ ही हड्डियों को भी स्वस्थ रखता है. यह शुगर के मरीज़ों में पाचन को बेहतर बनाए रखता है और साथ ही कब्ज़, गैस या पेट फूलने से परेशान के लिए कारगर साबित होता है

सेब के छिलके में विटामिन्स-ए, के और सी से भरपूर होता है. इसके अलावा सेब के छिलके में पोटैशियम, कैल्शियम और फास्फोरस होता है. जो दिल, दिमाग, किडनी के सेहत के लिए काफी फायदेमंद है.

सेब के छिलके में एंटीऑक्सीडेंट्स जैसे कई पाए जाते हैं, जो ब्लड शुगर और कोलेस्ट्रॉल लेवल को कंट्रोल रखने में मदद करता है, जिससे दिल हेल्दी रहता है.

फेफड़ों की सुरक्षा के लिए सेब का छिलका बेहद फायदेमंद होता है. इसमें क्वेरसेटिन होता है, एक एंटी इंफ्लामेटरी यौगिक है जो फेफड़ों को कई बीमारियों से बचाता है.

सेब के छिलके में पाए जाने वाले एंटीऑक्सिडेंट्स शरीर की कोशिकाओं को कैंसर से बचाने में सहायक होते हैं. इसके अलावा सेब के सेवन से ब्लड शुगर लेवल नियंत्रित रहता है.

प्रेग्नेंसी में महिलाएं ऐसे सोने की भूलकर,बढ़ सकती हैं मुस्किलें!

प्रेग्नेंसी में महिलाओं को कई चीजों को लेकर सावधानियां बरतने की जरूरत होती है, जिसमें खान- पान से लेकर सोना-बैठना कई चीजें शामिल है. अगर प्रेग्नेंसी के दौरान कोई भी गलती करते हैं तो इसका सीधा असर आपके गर्भ में पल रहे शिशु पर पडता है. इस लिए प्रेग्नेंसी में महिलाओं को डाइट के साथ-साथ स्लीपिंग पोजीशन पर भी अच्छे से ध्यान देने की जरूरत होती है. क्योंकि प्रेग्नेंसी में गलत स्लीपिंग पोजीशन का सीधा असर आपके गर्भ में पल रहे शिशु पर पडता है. ऐसे में आज हम आपको इस लेख में बताएंगे प्रेग्नेंसी में सही स्लीपिंग पोजीशन के बारे में.

प्रेग्नेंसी में महिलाओं पेट के बल सोने से बचना चाहिए. क्योंकि इसका सीधा असर आपके गर्भ में पल रहे शिशु पर पडता है. ऐसे में शरीर में रक्त प्रवाह कम हो जाता है, जिससे शरीर में ऐंठन, दर्द हो सकता है और बच्चे पर भी गलत प्रभाव पड़ सकता है.

प्रेग्नेंसी में कुछ महिलाएं काम के दौरान थकान और कमजोरी के कारण बैठकर सो जाती हैं, जिसकी वजह से उनका शरीर पूरी तरह से आराम नहीं कर पाता है. ऐसे में आपको काफी थकान फील हो सकती है. लेकिन प्रेग्नेंसी में बैठकर सोने से बचना चाहिए.

गर्भावस्था के दौरान बायीं करवट सोने की कोशिश करे. इस दौरान अपने पैरों के बीच तकिया रखें, इससे आपकी जांघों को आराम मिलता है.

पहली तिमाही

गर्भावस्था के दौरान पीठ के बल सोना ठीक है, लेकिन एक तकिया पैरों के बीच में रखें ताकि पैर थोड़े मुड़े रहें.

प्रेग्नेंसी में बाएं ओर सोना भी अच्छा है, इससे रक्त संचार बेहतर होता है.

दूसरी तिमाही

गर्भावस्था के दौरान बाएं ओर सोना जारी रखें.

प्रेग्नेंसी में तकिया का उपयोग करें ताकि गर्भ के बढने् से पीठ दर्द न हो.

तीसरी तिमाही

बाएं ओर सोना जारी रखें, इससे रक्त संचार और बच्चे की गति बेहतर होती है.

हरिद्वार नगर निकाय चुनाव में भाजपा ने की जनता से सीधे जुड़ने की अनूठी पहल

हरिद्वार । हरिद्वार नगर निकाय चुनाव में भाजपा ने एक नई दिशा में कदम बढ़ाते हुए जनता से सीधे जुड़ने की अनूठी पहल की है। पार्टी ने अपने मेयर प्रत्याशी किरण जैसल का संकल्प पत्र पूरी तरह से जनता के सुझावों पर आधारित बनाने का निर्णय लिया है। भाजपा जिला हरिद्वार के अध्यक्ष संदीप गोयल ने बताया कि यह प्रयास पार्टी को आम जनता के करीब लाने और उनकी प्राथमिकताओं को समझने का एक महत्वपूर्ण माध्यम साबित होगा।

भाजपा ने यह साफ कर दिया है कि विकास योजनाएं अब जनता की इच्छाओं और जरूरतों के अनुरूप ही बनाई जाएंगी। पार्टी का मानना है कि बिना जनता की भागीदारी के कोई भी संकल्प पत्र अधूरा रहता है। इसी सोच के तहत नगर निगम क्षेत्र में विभिन्न स्थानों पर सुझाव एकत्र किए गए, ताकि जनता की वास्तविक अपेक्षाओं को समझकर उन्हें पार्टी के एजेंडे में शामिल किया जा सके। भाजपा का यह प्रयास साबित करता है कि पार्टी केवल वादों तक सीमित नहीं रहना चाहती, बल्कि जनता की समस्याओं और सुझावों को ध्यान में रखते हुए विकास कार्यों को प्राथमिकता देगी।

पूर्व प्रदेश अध्यक्ष और नगर विधायक मदन कौशिक ने भाजपा की इस रणनीति की सराहना करते हुए कहा कि पार्टी का उद्देश्य ऐसे वादे करना नहीं है जो जनता

पर थोपे जाएं। भाजपा चाहती है कि नगर निगम का विकास जनता की आवश्यकताओं और सुझावों पर आधारित हो। उन्होंने कहा कि हर नागरिक का अधिकार है कि वह यह तय करे कि उसका शहर किस दिशा में और किस तरीके से विकसित हो। भाजपा इस अधिकार का सम्मान करती है और जनता से सीधा संवाद स्थापित करने के लिए निरंतर प्रयासरत है। इसी क्रम में भाजपा ने जनता से सुझाव एकत्र करने की प्रक्रिया को और मजबूत किया है, जिससे पार्टी की योजनाएं और नीतियां पूरी तरह से जनभावनाओं पर आधारित हो सकें।

इस पहल से भाजपा की छवि एक ऐसी पार्टी के रूप में उभर रही है जो जनता की बात सुनती है और उनकी जरूरतों को प्राथमिकता देती है। भाजपा का यह प्रयास न केवल विकास कार्यों को दिशा देगा बल्कि राजनीति में एक सकारात्मक बदलाव भी लाएगा।

नगर निगम चुनाव प्रभारी ज्योति गैरोला ने जानकारी दी कि आज हरिद्वार शहर के प्रमुख चौराहों पर सुझाव पेटिकाएं रखी गई । इनमें राठी चौक, हर की पौड़ी, वाल्मीकि चौक, शिव मूर्ति चौक, शंकराचार्य चौक, श्री राम चौक, कटरा बाजार, पुलजटवाड़ा, सब्जी मंडी, ज्वालापुर, राजा गार्डन, जगजीतपुर चौक, बाजार, कनखल और पुलिस थाना कनखल जैसे प्रमुख स्थान शामिल थे। इन सुझाव पेटिकाओं ने जनता को अपनी राय व्यक्त करने का एक सीधा मंच प्रदान किया। यह कदम जनता की भागीदारी को बढ़ावा देने के साथ-साथ भाजपा के विकास एजेंडे को भी मजबूती देगा। इस प्रक्रिया से नागरिकों को अपनी आवश्यकताओं और विचारों को सीधे पार्टी तक पहुँचाने का अवसर मिला, जिससे पार्टी का संकल्प पत्र और भी सशक्त और यथार्थवादी बन सके।

राजा गार्डन पर घोषणा पत्र के लिए सुझाव एकत्र करते हुए जिला उपाध्यक्ष लव शर्मा ने कहा कि भाजपा का यह प्रयास विपक्षी दलों के लिए भी एक बड़ी चुनौती बनकर उभरा है, क्योंकि इससे भाजपा की छवि एक जनसमर्थक और विकासोन्मुख पार्टी के रूप में और अधिक मजबूत हुई है। इस अनूठी पहल से यह साबित होता है कि भाजपा केवल घोषणाओं में विश्वास नहीं करती, बल्कि जमीनी स्तर पर जनता की आवाज को महत्व देकर वास्तविक बदलाव लाने का संकल्प रखती है।

इस अवसर पर संजय चोपड़ा ललित सचदेवा विकल राठी विनय अग्रवाल भोला शर्मा आशीष चौधरी मृदुल कौशिक ओम कुमार हर्ष वर्मा वरुण चौहान देवेश वर्मा सुमित लखेड़ा दिनेश कालरा मनोज चौहान पंकज बागड़ी प्रशांत चौधरी सौरभ चौहान शुभम चौहान सुबे सिंह लोकेश पाल सुदेश कुमार सोनी आदि उपस्थित रहे।

कांग्रेस ने मेयर और पार्षदों के पक्ष में निकाली बाइक रैली

हरिद्वार । कांग्रेस ने सूखी नदी से हरकी पैड़ी तक पार्टी की मेयर और पार्षद प्रत्याशियों के पक्ष में बाइक रैली निकाली। हरकी पैड़ी में सभा में कहा गया कि हरिद्वार कॉरिडोर से व्यापारियों का बारी अहित होगा। इसीलिए कांग्रेस इसका पुरजोर विरोध करेगी। कहा गया कि निकाय चुनाव में पार्टी के प्रत्याशियों को जिताने के लिए सभी जी जान से कार्य करेंगे। बाइक रैली सूखी नदी से भीमगोड़ा बैरियर, काली मंदिर होकर हरकी पैड़ी पर पहुंची। इसमें काफी संख्या में कार्यकर्ता और समर्थक शामिल रहे। महानगर अध्यक्ष अमन गर्ग ने कहा कि भाजपा की कॉरिडोर योजना को लेकर मंशा साफ नहीं है। कांग्रेस व्यापारियों के हितों के साथ कुठाराघात नहीं होने देगी। सरकार कॉरिडोर योजना से व्यापारियों का अहित करेगी तो पुरजोर विरोध किया जाएगा।

धूप खिलने के बाद दिन में ठंड से मिली राहत, शाम को ठंड बढ़ गई

हरिद्वार । धर्मनगरी में शनिवार को दिन में धूप निकलने के बाद लोगों को ठंड से थोड़ी राहत मिली। दोपहर को धूप खिलने के कारण दिन में ठंड का एहसास कम रहा। सुबह और शाम के समय घने कोहरे और सर्द हवाओं ने लोगों को परेशान किया। शनिवार को अधिकतम तापमान 16 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 5 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ। शुक्रवार को अधिकतम तापमान 14 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 5 डिग्री सेल्सियस रहा था। दिन में धूप निकलने और अधिकतम तापमान में बढ़ोतरी के बाद ठंड का एहसास कम रहा है। धूप निकलने के बाद लोगों को ठंड से राहत मिली। दिन में लोग कई स्थानों पर खड़े होकर धूप तापते नजर आए। हालांकि सुबह के समय घने कोहरे और शीत लहर ने लोगों को परेशान किया। सुबह के समय सर्द हवाओं के बीच लोगों की कंपकपी छूटा गई।

रेडी पटरी के लघु व्यापारियों ने भाजपा की मेयर प्रत्याशी किरण जैसल सहित सभी वार्ड प्रत्याशियों को दिया समर्थन

हरिद्वार। रेडी पटरी के स्ट्रीट वेंडर्स लघु व्यापारियों के एकमात्र सामूहिक संगठन लघु व्यापार एसो.के प्रांतीय अध्यक्ष संजय चोपड़ा के नेतृत्व में रेडी पटरी के लघु व्यापारियों ने भारतीय जनता पार्टी की मेयर प्रत्याशी श्रीमती किरण जैसल सहित 60 वाडो के भाजपा पार्षद प्रत्याशी को चुनाव में अपना पूर्ण खुला समर्थन दिया।इस अवसर पर हरिद्वार के क्षेत्रीय विधायक पूर्व कैबिनेट मंत्री मदन कौशिक सहित नगर निगम चुनाव के मुख्य प्रभारी विकास तिवारी पूर्व पार्षद सुभाष कुमार की संयुक्त मौजूदगी में रेडी पटरी के लघु व्यापारियों ने उत्साहित होकर भाजपा की मेयर प्रत्याशी श्रीमती किरण जैसल का फूल मालाओं से भव्य स्वागत किया रेडी पटरी के लघु व्यापारियों ने मांग की हरिद्वार नगर निगम में भारतीय जनता पार्टी का बोर्ड गठित होने के उपरांत समस्त नगर निगम क्षेत्र में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी स्ट्रीट वेंडर्स आत्मनिर्भर योजना राष्ट्रीय आजीविका मिशन केंद्रीय पत्र विक्रेता संरक्षण अधिनियम उत्तराखंड नगरी फेरी नीति नियमावली के नियम अनुसार सभी वाडो में रेडी पटरी के लघु व्यापारियों को अलग से विकसित करते हुए वेंडिंग जोन के रूप में व्यवस्थित व स्थापित किए जाने की मांग को प्रमुखता से दोहराया कार्यक्रम भाजपा मेयर प्रत्याशी के कार्यालय पर किया गया। इस अवसर पर भाजपा महापौर प्रत्याशी श्रीमती किरण जैसल ने कहा चुनाव जीतने के उपरांत रेडी पटरी के लघु व्यापारियों को स्वरोजगार के अवसर दिया जाना मेरी प्राथमिकता होगी। पूर्व शहरी विकास मंत्री क्षेत्रीय विधायक मदन कौशिक ने कहा रेडी पटरी के लघु व्यापारियों को मुख्य धारा में लाने के लिए मेरी और से शहरी विकास मंत्री रहते हुए पूरे प्रदेश के सभी नगर निकायों में रेडी पटरी के लघु व्यापारियों को विकसित किए जाने को लेकर नियमावली बनाई गई थी आज फेरी नीति नियमावली के तहत राज्य की सभी नगर निकायों के माध्यम से केंद्र और राज्य सरकार का संरक्षण दिया जा रहा है इस अवसर पर लघु व्यापार एसो.के प्रांतीय अध्यक्ष संजय चोपड़ा ने कहा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के संयुक्त नेतृत्व में फुटपाथ के कारोबारी रेडी पटरी के स्ट्रीट वेंडर्स लघु व्यापारियों के लिए एक दर्जन से अधिक योजनाएं चलाई जा रही है केंद्र और राज्य सरकार के संरक्षण मे लघु व्यापारियों को स्व रोजगार के अवसर दिए जा रहे हैं जो कि हर्ष का विषय है उन्होंने कहा आगामी 23 जनवरी को भारतीय जनता पार्टी की महापौर प्रत्याशी श्रीमती किरण जैसल सहित सभी पार्षद प्रत्याशियों को अपने खुले समर्थन के साथ

मत का प्रयोग कर हरिद्वार नगर निगम में भाजपा का बोर्ड गठित करने में अपनी अहम भूमिका निभाएंगे।

हरिद्वार नगर निगम चुनाव में भाजपा का खुला समर्थन करते रेडी पट्टी के लघु व्यापारी एसो. के प्रतिनिधियों में सुनील कुकरेती ,मनीष शर्मा, ओमप्रकाश भाटिया ,विकास सक्सेना, प्रद्युमन सिंह ,शुभम सैनी, कुंदन कश्यप, दिलीप गुप्ता, मोहनलाल, वीरेंद्र कुमार ,जय भगवान, रणवीर सिंह ,धर्मपाल, तस्लीम अहमद ,नईम सलमानी, सचिन बिष्ट ,चंदन रावत ,फूल सिंह, कामिनी मिश्रा ,मंजू पाल, सुनीता चौहान ,पुष्पा दास, अनीता देवी आदि भारी तादाद में लघु व्यापारी शामिल रहे।

स्वामी,मुद्रक व प्रकाशक अवनीश कुमार द्वारा भगवती प्रिंटर्स,इण्डस्ट्रियल एरिया, हरिद्वार से छपवाकर ग्रा. बसवाखेड़ी पो. मंगलौर, हरिद्वार (उत्तराखण्ड़) से प्रकाशित किया।
सम्पादकः अवनीश कुमार, मो० 9410553400
ई-मेलः liveskgnews@gmail.com
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र हरिद्वार न्यायालय में ही होगा)
सभी लेखों में सम्पादक की सहमति जरूरी नही है।